वार्षिक रिपोर्ट

1968-69

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय-सूची

1. परिचय

सितंबर 1961 में स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् भारत में स्कूल-शिक्षा में सुधार लाने के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार के विकास-कार्यों में संलग्न है। इसका कार्य शैक्षिक अनुसंधान करना, इनमें सहायता करना, इन्हें बढ़ावा देना तथा इनमें समन्वय स्थापित करना, सेवापूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण व विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन करना एवं शिक्षा की नवीनतम तकनीकों और पद्धतियों से संबंधित जानकारी देना है। यह शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय महत्त्व के सर्वेक्षणों का आयोजन करती है और देश में स्कूल-शिक्षा की आवश्यक समस्याओं की जाँच पर विशेष बल देती है। परिषद् राज्यों द्वारा गुणात्मक सुधार के लिए की गई योजनाओं, उनके कार्यान्वयन और मूल्यांकन के कार्यों में सहयोग देती है। यह प्रशिक्षण और प्रशासन में सभी स्तरों पर संलग्न मानव-साधनों को गति प्रदान करने की इच्छुक है।

परिषद् विगत सात वर्षों से, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बड़े विकास-कार्यक्रमों में लगी हुई है। इसने मौलिक और व्यावहारिक अनुसंधान में 50 बृहद् परियोजनाएँ प्रारंभ कर रखी हैं। यह शनैः शनैः भारतीय स्थिति को प्रभावित करने वाले बड़े क्षेत्रों पर सात प्रकार से प्रभाव डालने लगी है। ये निम्नलिखित प्रकार हैं :

(i) सीखने और विचारने की मौलिक प्रक्रियाओं की जाँच जिनमें सम्मिलित है उपलब्धि का प्रयोजन, विकास का माप और 'यह ऐसा क्यों है, यह क्या है' का स्पष्टीकरण, भारतीय बच्चों का उनकी वर्तमान अवस्थाओं में सामाजिक आर्थिक ढाँचे के विरुद्ध विकास का ढंग, परीक्षणों का विकास और प्रतिभाशील बच्चे का अध्ययन करना। सीखने के आधार केवल कल्पना के भरोसे न रह कर विज्ञान-सम्मत रूप में स्थापित किए जा रहे हैं।

(ii) उपलब्ध की जा सकने वाली निर्धारण योग्य क्षमता के स्तर पर, पाठ्यक्रम का किस प्रकार निर्धारण किया जाय कि पहले विचार और फिर उनके अनुरूप समझ उपलब्ध हो जाय, विभिन्न विषयों के पारस्परिक संबंधों पर बल प्रदान करते हुए पाठ्यक्रम-विकास की तकनीकों और प्रकारों की जाँच करना।

(iii) इस बात की जाँच करना कि पाठ्यक्रम में निर्मित विचारों और समझ को किस प्रकार महत्त्वपूर्ण विषय-क्षेत्रों की पाठ्य-पुस्तकों में प्रतिबिम्बित किया जा सकता है।

(iv) विस्तार सेवाओं को इस प्रकार विकसित करना कि शिक्षक परिवर्तन का प्रभावी साधन बने, और क्षेत्र में शिक्षक की तैयारी और विकास के लिए अनुसंधान को अभ्यास से अधिकाधिक संबद्ध करना।

(v) चूँकि प्रशिक्षण का कार्य सतत कार्य है, इसलिए परिषद् ने बी०एड, एम० एड, पी एच० डी० स्तरों पर सेवापूर्व प्रशिक्षण देने के अपने कार्यक्रम के साथ-साथ शिक्षकों, अध्यापक-शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों और अनुसंधानकर्ताओं के

सेवाकालीन प्रशिक्षण के कार्यक्रमों का विकास किया है ।

(vi) निर्धारण को अधिक विश्वसनीय और वैध बनाने के लिए परीक्षा-सुधार के बारे में कार्य करना । परिषद् सभी स्कूल-विषयों में लक्ष्य-आधारित नमूने के प्रश्नों का एक बड़ा भंडार भी तैयार कर रही है ।

(vii) परिषद् ने आज के भारत के लिए विज्ञान और गणित की शिक्षा के ठोस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण माना है और औद्योगिक-अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वशील इस कार्यक्रम को निरूपित व विकसित किया है ।

इसके साथ ही, परिषद् ने देश की अन्य संस्थाओं को शिक्षा में अनुसंधान-परियोजनाओं का योगदान किया है । परिषद् ने हमारी तात्कालिक समस्याओं के संबंध में जनता को जागृत करने और शिक्षा में आज प्रत्यक्षतः हलचल के लिए वातावरण निर्माण करने के हेतु सेमिनार और सम्मेलनों का आयोजन किया है । इसके अतिरिक्त, प्रतिवेदन-वर्ष में, परिषद् ने शैक्षिक-अध्ययनों में यूनेस्को, आई० ई० ए० जैसी कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सहयोग किया है ।

वस्तुतः प्रतिवेदन में राष्ट्रीय परिषद् व इसके एककों——राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के 11 विभागों, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान और चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के विकास और उनके अनुसंधान, प्रशिक्षण तथा विस्तार के तीन प्रमुख क्षेत्रों में उनके उद्देश्यों को दिखाया गया है । इसके अतिरिक्त परिषद् एक सूचनाकेन्द्र के रूप में कार्य करती है और शैक्षिक साहित्य के प्रकाशन के लिए उत्तरदायी है ।

पिछले वर्ष परिषद् के कार्यों की समीक्षा करने और इसके आगे के विकास हेतु मार्गदर्शन के लिए योजना आयोग के सदस्य डाक्टर बी० डी० नाग चौधरी की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की समीक्षा-समिति ने अपना प्रतिवेदन दे दिया है जो भारत सरकार के विचाराधीन है ।

2. संगठन, प्रशासन और वित्त

पंजीकृत स्वायत्त संस्था राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संविधान के अंतर्गत व्यवस्था है कि भारत सरकार के शिक्षामंत्री और शिक्षा-सलाहकार क्रमशः पदेन परिषद् के और इस परिषद् की शासी निकाय के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष होंगे। डाक्टर त्रिगुण सेन ने इसके अध्यक्ष के रूप में परिषद् का इस वर्ष के अधिक काल तक मार्गदर्शन किया। फरवरी 1969 में प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव ने परिषद् की बागडोर सँभाली। भारत सरकार के भूतपूर्व शिक्षा-सचिव और परिषद् के संस्थापक-उपाध्यक्ष श्री प्रेम कृपाल अप्रैल 1968 में सेवानिवृत्त हो गए, और इस वर्ष की अधिक अवधि में फरवरी 1969 तक श्री जी० के० चंदीरामानी ने उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। श्री प्रेम कृपाल की सेवानिवृत्ति के पश्चात, जो भारत सरकार के शिक्षा-सलाहकार होने के साथ-साथ परिषद् के संस्थापक-निदेशक भी थे, इस वर्ष किसी निदेशक की नियुक्ति नहीं की गई। परिषद् का दैनंदिन कार्य पूर्णकालिक सचिव श्री प्रभाकर नरहर नातू की सहायता से पूर्णकालिक संयुक्त निदेशक डाक्टर शिव के० मित्र की देखभाल में चलता रहा।

परिषद् का संगठनात्मक रूप पिछले वर्षों की ही भांति, मोटे रूप में उसी प्रकार का बना रहा जैसा अगले पृष्ठ पर दिखाया गया है।

परिषद् का प्रशासनिक सचिवालय, जो अभी तक इंद्रप्रस्थ इस्टेट में किराए के भवन में स्थित था, मई 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रांगण में स्थानांतरित कर दिया गया। निर्माणाधीन छः-मंजिले प्रशासनिक खंड के जुलाई 1969 में उपयोग योग्य हो जाने की आशा है। तभी, आजकल कैम्पस से बाहर किराए के भवनों में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शेष विभागों को योजनाबद्ध रूप में क्रमशः कैम्पस में स्थानांतरित करने का विचार है।

बैठकें

परिषद् की सामान्य निकाय

परिषद् की सातवीं सामान्य वार्षिक बैठक दिनांक 10 अक्तूबर, 1968 को नई दिल्ली में हुई। इस बैठक में 1967-68 वर्ष के वार्षिक प्रतिवेदन की समीक्षा हुई। परिषद् ने बजट अनुमानों के साथ-साथ 1968-69 के कार्यक्रमों पर भी विचार किया। अध्यक्ष ने स्कूल-शिक्षा में सुधार के लिए परिषद् द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण अनुसंधान-अध्ययनों की प्रशंसा की और प्रेरणा दी कि इनका व्यापक प्रचार किया जाय। अध्यक्ष महोदय ने यह भी कहा कि जिस किसी व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त एक और दूसरी भाषा सीखनी पड़े तो, चाहे यह हिन्दी हो अथवा अंग्रेजी या कोई और भाषा—परिषद् को उस दूसरी भाषा के प्रशिक्षण की विधि पर परामर्श भी देना चाहिए। परिषद् को चाहिए कि वह परामर्श दे कि किस स्तर से दूसरी भाषा का प्रशिक्षण प्रारंभ किया जाए और एक भाषा को सीखने में कितने वर्ष लगेंगे।

शासी निकाय

इस वर्ष शासी निकाय की तीन बैठकें दिनांक 16-5-68, 4-6-68, और 21-9-68 को हुईं। इन बैठकों में, अन्य विषयों के साथ-साथ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की समीक्षा-समिति की बड़ी-बड़ी सिफारिशों पर भी विचार किया गया। यह प्रतिवेदन शासी निकाय के पर्यवेक्षणों के साथ, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के विचाराधीन है।

वित्त समिति

वित्त समिति की बैठक 8 अप्रैल, 1968 को हुई। समिति ने वर्ष के बजट अनुमानों को मान्य करने के अतिरिक्त, वित्तीय उलझाव वाले विभिन्न प्रस्तावों

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
शासी निकाय
शैक्षिक अध्ययन मंडल
(दो स्थायी समितियों सहित)
वित्त समिति
अनुसंधान
विस्तार एवं क्षेत्र सेवाएं
संस्थान
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर
भोपाल
भुवनेश्वर
मैसूर
1. विज्ञान शिक्षा विभाग
2. केन्द्रीय विज्ञान कार्यशाला
3. पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
4. मनोवैज्ञानिक आधार विभाग
5. शिक्षा आधार विभाग
6. अध्यापक शिक्षा विभाग
7. शैक्षिक प्रशासन विभाग
8. श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग
9. क्षेत्र सेवा विभाग
10. प्रौढ़ शिक्षा विभाग
11. शैक्षिक सर्वेक्षण एकक और
बीकानेर, हैदराबाद और शिलाङ के क्षेत्र एकक
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय, मनोविज्ञान-प्रयोगशाला व परीक्षण पुस्तकालय और भाषा प्रयोगशाला
प्रकाशन एकक

पर भी विचार किया। अन्य विषयों के साथ-साथ एक महत्त्वपूर्ण मद का संबंध क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के छात्र-कल्याण कोष में परिषद् द्वारा समान अनुदान की अदायगी के प्रस्ताव से था। इसे सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया।

शैक्षिक अध्ययन मंडल की स्थायी अनुसंधान समिति

स्थायी अनुसंधान समिति की दो बैठकें 20 अप्रैल, 1968 और 25 जनवरी, 1969 को आयोजित की गई। समिति ने वर्ष के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनुसंधान और विकास कार्यों पर विचार करने और उनको मान्य करने के अतिरिक्त परिषद् द्वारा दी गई वित्तीय सहायता से विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा सुप्रसिद्ध अनुसंधान संस्थाओं द्वारा प्रारंभ की जाने वाली 20 परियोजनाओं पर भी विचार किया और उनको मान्य किया। समिति ने लेखकों को आंशिक वित्तीय सहायता देकर शैक्षिक अनुसंधान के तीन उत्कृष्ट ग्रंथों के प्रकाशन-कार्य को भी मान्यता प्रदान कर दी। समिति के समक्ष परिषद् की वित्तीय सहायता से पूर्ण की गई परियोजनाओं के मूल्यांकन प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किए गए।

शैक्षिक अध्ययन मंडल की विस्तार और क्षेत्र-सेवाओं संबंधी स्थायी समिति

समिति की बैठक 15 जून, 1968 को हुई। इसमें वर्ष के लिए परिषद् के विस्तार और क्षेत्र-कार्यक्रमों को स्वीकार किया गया जिनमें बीकानेर, हैदराबाद और शिलाङ स्थित तीन क्षेत्र-एककों के कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

सदस्यता

परिषद् की विभिन्न परामर्शदातृ और प्रशासनिक निकायों की सदस्य-सूचियाँ परिशिष्ट क, ख, ग, घ और ङ में दी गई हैं।

परिषद् का वित्त स्रोत

परिषद् की निधियों का प्रमुख स्रोत भारत सरकार द्वारा दिए गए अनुदान हैं। 1968-69 के संशोधित अनुदान और 1969-70 की बजट-माँगों की तुलना में बजट-आवंटन निम्नलिखित प्रकार हैं :

1968-69

	बजट अनुमान	संशोधित अनुमान
		(लाख रुपयों में)
योजनेतर	180·41	180·28
योजना	227·15	177·35

1969-70

	सरकार के समक्ष प्रस्तुत की गई बजट-माँगें	बजट आवंटन
		(लाख रुपयों में)
योजनेत्तर	298·23	208·78
योजना	*219·80	139·00

*(इसमें राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा परिषद् के लिए 12·50 लाख रु० की राशि भी सम्मिलित है)

भिन्न-भिन्न स्तरों पर किए गए इन प्रबल संशोधनों और कटौतियों से, निस्संदेह, हमारी विकासोन्मुख गतिविधियों के प्रकार और उद्देश्य सीमित हो जाएँगे। बजट-अनुमानों के और अधिक विवरण परिशिष्ट च में दिए गए हैं।

3. अनुसंधान, अध्ययन और सर्वेक्षण

भारत में शैक्षिक अनुसंधान का प्रारंभ हाल ही में हुआ है। अभी तक इसकी उपेक्षा का कारण अंशतः तकनीकी जानकारी की कमी और अंशतः धन की कमी रहा है। अब यह बात स्वीकार कर ली गई है कि शिक्षा एक निवेश है और हमारे सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए शिक्षा का अभी तक उस क्षेत्र पर प्रभावी भूतपूर्व तदर्थ धारणाओं, मतों और रूढ़िवाद के स्थान पर सुविचारित योजनाओं के आधार पर आयोजन किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में स्पष्टतः एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसने अवबोधन और चिन्तन जैसी आधारभूत प्रक्रियाओं की जाँच का कार्यभार उठाया है जिनमें उपलब्धि का प्रयोजन, भारतीय बच्चों का उनकी अपनी विद्यमान अवस्थाओं के सामाजिक-आर्थिक ढाँचे के विपरीत उनके विकास की विधि, परीक्षणों का विकास, प्रतिभासंपन्न बच्चे का अध्ययन आदि सम्मिलित हैं। परिषद् ने कक्षा में पढ़ाने की व्यावहारिक समस्याओं का विश्लेषण करने और उनके उत्तर खोजने का प्रयत्न किया है। इसने भावी शैक्षिक विकास की ठोस योजना में आवश्यक प्रश्नों पर मूल आंकड़े प्रस्तुत करने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षणों का एक क्रम प्रारंभ कर रखा है।

अनुसंधान कार्य के सहकारी पक्ष पर जोर देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहित किया गया है और अन्य भारतीय संस्थाओं को भी, जो स्वतंत्र रूप से अथवा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सहयोग से ऐसे कार्य शीघ्र करने में समर्थ हैं, अनुसंधान-कार्य सौंपा गया है। इसने शैक्षिक अनुसंधान की वृद्धि के लिए आवश्यक निपुणता विकसित करने के लिए अनुसंधान-प्रकारों के पाठ्य-क्रमों का आयोजन किया है।

इस वर्ष पहले प्रारंभ की गई परियोजनाओं में प्रगति हुई थी, तथा कुछ अन्य नए अध्ययन व सर्वेक्षण किए गए थे। यहां इलाहाबाद, दिल्ली, बंबई, मद्रास, कलकत्ता, हैदराबाद और अहमदाबाद सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के शहरी, उपनगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों के 2½ वर्षायु बच्चों के नमूने को रीतिबद्ध अध्ययन के माध्यम से भारत में प्रगति के आदर्श निर्माण करने के उद्देश्य से प्रेरित विकासशील आदर्श परियोजना का उल्लेख करना अभीष्ट होगा। मोटर और वैयक्तिक-सामाजिक विकास पक्षों से संबद्ध आंकड़ों का विश्लेषण पूरा कर लिया गया है। अनुकूली और भाषा विकास पक्षों का विश्लेषण किया जा रहा है। पिछले वर्ष प्रारंभ की गई बाल-विकास की एक अन्य परियोजना का संबंध स्कूल-पूर्व वर्गों में धारणा निर्माण के अध्ययन से है। इसका उद्देश्य अन्य अनुभवों के संदर्भ में भाव-प्रशिक्षण की तुलना में संरचित अनुभवों के माध्यम से एकाकी भाव-प्रशिक्षण द्वारा हुए धारणा-निर्माण एवं वैयक्तिक-सामाजिक समायोजन में तुलनात्मक प्रभावोत्पादकता की जाँच करना है। ये स्कूल-पूर्व शिक्षा कार्यक्रम का अंग है। देश के विभिन्न भागों के सात केन्द्रों के सहयोग से चल रही सहकारी परीक्षण विकास परियोजना—14-25 वर्षायु-सीमांतर्गत व्यावसायिक अभिरुचि-वर्ग 5 और 11 के लिए—के दो परीक्षण प्रायः पूर्ण हो ही चुके हैं। शिक्षक मनोबल और प्रोत्साहन विकास अध्ययन के अंतर्गत कुछ विशिष्ट प्रायोगिक परियोजनाएँ स्कूल और प्रशिक्षण महाविद्यालयों के स्तर पर प्रारंभ की गई थीं। अन्य महत्वपूर्ण परियोजना का संबंध जिसमें इस वर्ष कुछ प्रगति हुई थी, शिक्षित वयस्कों द्वारा दूसरी भारतीय भाषाओं के ग्रहण करने में कार्यक्रमित अवधारण-तकनीकों के उपयोग से है। दो स्वयं-अनुदेशक 'कार्यक्रम'—एक बंगला भाषी वयस्कों को हिन्दी सिखाने और दूसरा बंगला भाषी

वयस्कों को उड़िया सिखाने——विकसित किए जा रहे हैं। हिन्दी वाले 'कार्यक्रम' का प्रारूप पहले ही बन चुका है और अनेक व्यक्तियों पर उसका परीक्षण भी किया जा चुका है। हैदराबाद की सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश, पूना के डेकन कालेज के भाषाविज्ञान-विभाग तथा अन्नामलाई विश्वविद्यालय के एडवान्स्ड सेन्टर ऑफ लिंग्विस्टिक्स के सहयोग से कार्यान्वित करने के लिए प्रस्तावित दूसरी भाषा सिखाने हेतु 'विधियां और सामग्री-विकास' परियोजना की रूप-रेखा को अंतिम रूप प्रदान कर लिया गया है जिससे कि अगले वर्ष प्रारंभ में ही कार्य आगे बढ़ जाए।

शैक्षिक उपलब्धि मूल्यांकन की अंतर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा प्रारंभ की गई 'अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि' परियोजना में भाग लेने वाले विश्व के 21 देशों में से भारत भी एक है। परीक्षणों और प्रश्नोत्तरों का अनुवाद हो चुका है और उनका अभ्यास भी किया जा चुका है, तथा मद-विश्लेषण की आधार सामग्री समन्वय के लिए अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र को भेज दी गई थी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जा रही एक अन्य परियोजना एशिया क्षेत्रीय परियोजना है। परिषद् एशियाई देशों में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर पाठ्यक्रम विकास के तुलनात्मक अध्ययन के लिए यूनेस्को और जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान के साथ सहयोग कर रही है। भारत के लिए प्रारूप-प्रतिवेदन का अध्ययन फरवरी, 1969 में टोकियो में हुए अनुसंधान-वर्कशाप में वैसे ही प्रति-वेदनों के साथ-साथ किया गया था। तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रारंभ किया गया था।

अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि का संबंध महत्त्वपूर्ण विषयों पर अग्रणी आधार पर अथवा राष्ट्रीय स्तर पर किए गए लाभदायक शैक्षिक सर्वेक्षणों से है। इन महत्त्वपूर्ण विषयों में तकनीकी शिक्षा देने वाले उच्च/उच्चतर माध्यमिक/बहुद्देशीय स्कूलों में, तथा विकलांगों को शिक्षा देने वाली ग्रामीण क्षेत्रों में महिला-शिक्षकों की कामकाज की अवस्थाओं का देखभाल करने वाली संस्थाओं में, और ऐतिहासिक सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान रखकर शैक्षिक कार्यक्रमों के संबंध में चुने हुए ग्रामीण सामुदायिक विकास खंडों में सुविधाएँ प्रदान करना है।

ये तो वर्ष भर में किए गए उन अनुसंधान-अध्ययनों और खोजों में से कुछ के ही उदाहरण हैं जिनमें बाल-विकास, किशोरावस्था, शिक्षक मनोबल और प्रोत्साहन, दूसरी भाषा का शिक्षण, तेजस्वी अल्पायु-उपलब्धिकर्ताओं व कार्यक्षम स्कूल-विफलताओं पर मार्गदर्शन व परामर्श का प्रभाव, कार्यक्रमित अव-बोधन, अपव्यय व गतिहीनता, परीक्षण-विकास, वयस्क साक्षरता परियोजनाएँ आदि सहित शिक्षा के विभिन्न महत्त्वपूर्ण क्षेत्र सम्मिलित हैं। इन विभिन्न क्षेत्रों में वर्ष भर में किए गए अनुसंधान-कार्यों के अधिक विवरण परिशिष्ट छ में देखे जा सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में ही अनुसंधान योजनाएँ बनाने के अतिरिक्त, राष्ट्रीय परिषद् ने स्वतंत्र-रूप से अथवा शैक्षिक अनुसंधान में संलग्न विभिन्न विश्वविद्यालय-विभागों, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा स्वैच्छिक संगठनों आदि को अनुसंधान-परियोजनाएँ दी हैं। इनका उद्देश्य अनुसंधान को सक्रिय बनाना और सारे भारत में ऐसे प्रमुख स्थानों का निर्माण करना है जो भारतीय स्थितियों में शैक्षिक अनुसंधान के ज्ञान-प्रसार का केन्द्र बन जाएँ। शिक्षा में महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं की विविधता से संबंध रखने वाली 75 से अधिक अनुसंधान-परियोजनाएँ तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मध्यप्रदेश, हरयाणा, राजस्थान और पंजाब सहित देश के विभिन्न भागों की विविध संस्थाओं को दी गई हैं। इस वर्ष, राष्ट्रीय परिषद् ने 25 से अधिक परियोजनाएँ संस्वीकृत कीं। इनमें, अन्य विषयों सहित, वाराणसी और जोधपुर विश्वविद्यालयों के छात्र-असंतोष और संबद्ध समस्याओं की परियोजनाएँ हैं। अन्य विशेष महत्त्व की परियोजनाएँ विविध स्कूल विषयों में रोगनिदान विषयक परीक्षणों के विकास की हैं, जो तीन संस्थाओं को संस्वीकृत हैं। वर्ष भर में संस्वीकृत परियोजनाओं की एक सूची परिशिष्ट ज में भी दी गई है। शैक्षिक अनुसंधान के इन उत्कृष्ट ग्रंथों के प्रकाशनार्थ तीन व्यक्तियों को सहायता भी दी गई थी।

राष्ट्रीय परिषद् ने अपने ही विभागों और शैक्षिक अनुसंधान के प्रसिद्ध केन्द्रों के सहयोग से अनुसंधान-परियोजनाओं का न केवल आयोजन ही किया है, अपितु वित्तीय सहायता और कुछ शैक्षिक मार्गदर्शन देकर अपनी कक्षा-समस्याओं को कार्य-अनुसंधान प्रकार की लघु प्रयोगात्मक परियोजनाएँ प्रारंभ कर हल करने के लिए प्रोत्साहन देकर माध्यमिक स्कूल-शिक्षकों में अनुसंधान प्रवृत्ति विकसित करने का यत्न किया है। प्रयोगात्मक परियोजनाओं की योजना लगभग एक दशक पूर्व प्रारंभ की गई थी और उसका प्रतिफल अत्यंत उत्साहवर्धक रहा है। इस वर्ष लगभग 800 परियोजना-प्रस्ताव आए थे, जिनमें से 400 प्रस्ताव वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए स्वीकार किए गए थे। इस संबंध में, शिक्षकों की सहायतार्थ दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं—एक पुस्तक 'ए हैन्डबुक फॉर क्लासरूम टीचर्स' है जिसमें प्रयोगात्मक, विकासशील, कार्य-अनुसंधान पर बल दिया गया है और दूसरी पुस्तक स्कूलों द्वारा विगत वर्षों में किए गए चुने हुए प्रतिवेदनों का संग्रह है। भविष्य में ऐसी कार्य-अनुसंधान परियोजनाओं में भाग लेने के इच्छुक शिक्षकों को और अधिक मार्गदर्शन प्रदान करने की दृष्टि से लगभग 100 अच्छी परियोजनाओं का सारांश तैयार कर लिया गया है।

भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा 1939-61 के काल में शिक्षा में डाक्टरेट और मास्टर की डिग्री के लिए मान्य अन्वेष-प्रबंधों और विवेचनाओं की एक वर्गीकृत-सूची 1966 में प्रकाशित की गई थी। इस प्रयत्न की सराहना सभी ने, और विशेषकर शैक्षिक अनुसंधान में संलग्न सभी व्यक्तियों ने की थी। इस वर्ष, इस क्रम में दूसरा संकलन प्रकाशित किया गया है जिसमें 1962-66 का काल आता है।

इस प्रकार, शैक्षिक अनुसंधान के लिए सीमित धन होते हुए भी राष्ट्रीय परिषद् ने देश में कक्षा-अभ्यासों में सुधार और उपयुक्त पाठ्यक्रम में विकास को प्रभावित करने वाली महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर अनुसंधान-कार्य को आयोजित करने, उसमें समन्वय स्थापित करने और उसे प्रोत्साहित करने का यत्न किया है।

4. पाठ्यक्रम और शैक्षिक साहित्य का विकास

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का मुख्य उद्देश्य स्कूल-शिक्षा में गुणात्मक-सुधार की दिशा में कार्य करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक अनिवार्य कार्य-क्षेत्रों में से कुछ ये हैं: (1) पाठ्यक्रम में संशोधन, (2) श्रेष्ठतर पाठ्यपुस्तकों, साधनों और उपकरणों का उत्पादन, (3) शिक्षक-क्षमता में वृद्धि करने की आवश्यकता के अतिरिक्त शिक्षण-विधियों और मूल्यांकन में सुधार। इस प्रकार पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण साधनों व उपकरणों, पूरक पाठ्य-सामग्री सहित उपयुक्त शैक्षिक साहित्य का उत्पादन एक ऐसा विशाल क्षेत्र है जिसमें केन्द्रीय संस्था के रूप में राष्ट्रीय परिषद् को अपनी शक्तियां लगानी चाहिए, और परिषद् ऐसा ही कर भी रही है।

परिषद् में स्कूलों के लिए विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, भाषा, कला और शिल्प आदि में पुन: पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए विषय-विशेषज्ञों, रीतिशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों के दलों का गठन किया गया है। इस बृहत्कार्य में योग्यतम विद्वानों और वैज्ञानिकों को भाग लेना अभीष्ट है। अत:, परिषद् ने मानविकी और विज्ञानों के परिष्कृत स्कूल-पाठ्यक्रम और पाठ्य-सामग्री के विकास के अपने कार्यक्रमों में विश्व-विद्यालय-प्रोफेसरों, विख्यात शिक्षाविदों, व्यावसायिक वैज्ञानिकों, भाषाविदों और अनुभवी स्कूल-शिक्षकों को बड़ी संख्या में सम्मिलित कर लिया है। विज्ञान और गणित के क्षेत्र में यूनेस्को और यूनिसेफ ने भी विशेषज्ञों और उपकरणों को देकर कार्यक्रम में सहायता दी है। पाठ्यक्रम और पाठ्य-सामग्री को व्यापक रूप में व्यवहार में लाने के लिए व्यापक परीक्षणों, जाँच-पड़तालों द्वारा परिष्कृत और अंतिम रूप दिया जाता है। केन्द्रीय विज्ञान कार्यशाला अपने स्कूलों में वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों, प्रयोगात्मक थैलों और अन्य सामग्रियों का रूपरेखांकन करके और उनका निर्माण करके संशोधित विज्ञान पाठ्यक्रम को सुविधापूर्वक लागू करने में सहायता करता है। श्रव्य-दृश्य शिक्षा-विभाग शैक्षिक चित्रों, फिल्मस्ट्रिपों, चार्टों और किट आदि को विकसित कर अपना योगदान करता है। परिषद् द्वारा प्रारंभ किए गए विस्तार-सेवाकेन्द्रों के माध्यम से स्कूल-विषयों में शिक्षण-एककों के रूप में कुछ हिदायत-सामग्री भी विकसित की गई है। शिक्षक-प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करने और उसमें सुधार लाने के प्रयत्न भी किए गए हैं।

1968-69 में पाठ्यक्रम विकास और हिदायत-सामग्री के उत्पादन की इस प्रमुख दिशा में विभिन्न अनुशासनों में की गई प्रगति का संक्षिप्त लेखा निम्नलिखित प्रकार है:

विज्ञान और गणित

प्रतिवेदन-वर्ष में स्कूल के विभिन्न स्तरों पर विज्ञान-शिक्षा के गुणात्मक सुधार को राष्ट्रीय परिषद् की ओर से प्राथमिकता मिलती रही। स्कूल-शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पिछले वर्ष प्रारंभ की गई विभिन्न योजनाएँ चालू रखी गई थीं।

यूनेस्को योजना-मिशन और कोठारी आयोग ने सिफारिश की है कि यद्यपि सामान्य विज्ञान को प्राथमिक स्तर पर पढ़ाया जाना जारी रखा जाय, तथापि भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान और गणित के विषय-अनुशासनों के रूप में विज्ञान की उच्चतर प्राथमिक स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए। परिष्कृत पाठ्यक्रम और पाठ्य-सामग्री के विकास में यही रीति अपनाई गई है। प्राथमिक स्तर के लिए सामान्य विज्ञान का मूल धारणा-आधारित पाठ्यक्रम संशोधित

किया गया है और प्रकाशन के लिए तैयार कर दिया गया है। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में, तीन खंडों में, 'टीचर्स हैन्डबुक ऑफ एक्टीविटीज' पूरी कर ली गई है। यह 'निर्देश पुस्तिका' शिक्षक को न केवल विज्ञान के मौलिक तथ्य बताती है अपितु जिस वैज्ञानिक क्रिया का संप्रेषण उसके माध्यम से कक्षा में अभीष्ट है उसके संबंध में अधिक जानकारी की समझ देने के लिए पूरक तथ्यों के हेतु मार्गदर्शन भी करती है। कक्षा 3 और 4 की पाठ्यपुस्तकों के प्रथम प्रारूप लिखे और पुनरीक्षित किए गए थे, और कक्षा-3 की पुस्तक के प्रारूप को अंतिम रूप देने का कार्य लगभग पूर्ण होने वाला है। अध्यापक-निर्देश-पुस्तिका में दिखाई गई गतिविधियों के अनुरूप ही एक प्राथमिक विज्ञान किट का रूपांकन और विकास किया जा चुका है।

मुख्य कार्य माध्यमिक स्तर पर परिष्कृत पाठ्य-विवरणों, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षकों के हेतु मार्गदर्शक सामग्री और मिडिल स्कूल स्तर के प्रथम वर्ष से ही वैयक्तिक अनुशासन के रूप में विज्ञान विषयों का अवबोधन कराने के लिए बेहतर देसी सामान में सुधार करना था। मिडिल-स्कूल-स्तर के तीन वर्षीय कार्य का प्रथम चरण लगभग पूर्ण हो ही चुका है। अंग्रेजी और हिन्दी में परीक्षात्मक पाठ्य-सामग्री के 28 शीर्षकों का विकास किया जा चुका है। सभी विषयों में शिक्षक-मार्गदर्शिकाओं के समस्त पांच शीर्षक भी विकसित किए जा चुके हैं। सहायक पत्र के रूप में, हमारी विज्ञान कार्यशाला में पूरे मिडिल स्तर के लिए 27 मदों वाले रसायन-किट, कक्षा 6 के शिक्षण के लिए 73 मदों वाले भौतिकी-किट, जीव-विज्ञान के लिए सामान के 10 मदों वाले, भौतिकी के 32 मदों वाले और गणित के 15 मदों वाले किट (इस पाठ्यक्रम को सिखाने के लिए) विशेष रूप से विकसित किए गए थे। 30 प्रयोगात्मक स्कूलों की प्रत्येक कक्षा के लगभग 1500 हिन्दी माध्यम वाले और लगभग 1090 अंग्रेजी माध्यम वाले छात्रों पर पाठ्य-सामग्री का परीक्षण किया गया था। सरकार के प्रयोगात्मक स्कूलों के छात्रों का प्रथम बैच मार्च 1969 में सार्वजनिक परीक्षा में बैठा था। सामग्री के परीक्षण, स्कूलों के सर्वाधिक निक्षरीण और प्रयोगात्मक स्कूल शिक्षकों से मिलने-जुलने से वे प्रतिपुष्ट आधार-सामग्रियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनके आधार पर सामग्रियाँ का संशोधन और व्यापक स्तर पर प्रकाशन के लिए परिष्कार किया गया है। पाठ्यपुस्तकों के ऐसे 18 शीर्षक (अंग्रेजी और हिन्दी में) पहले ही छप चुके हैं और 10 नए शीर्षक छप रहे हैं। प्रारंभिक सामग्री के उत्पादन के बाद राज्य सरकारों को इस सामग्री से परिचित कराने के लिए पग उठाए गए थे और केन्द्रीय विद्यालय संगठन, कुछ राज्य सरकारें और संघ-क्षेत्र सहित कुछ अभिकरणों ने राष्ट्रीय संस्थान द्वारा विकसित सामग्री को ग्रहण कर या उनके अनुसार अनुकूलन कर अपने मिडिल स्कूल पाठ्यक्रम को परिष्कृत करने का निश्चय किया है। इनका लेखा विस्तार और क्षेत्र-सेवा अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा। राज्य विज्ञान-शिक्षा संस्थानों और राज्य शिक्षा-संस्थानों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन अपने विज्ञान कार्यक्रमों से विभिन्न राज्यों को परिचित कराने के लिए मार्च, 1969 में आयोजित किया गया था।

राष्ट्रीय परिषद् द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालय केन्द्रों में विश्वविद्यालय प्रोफेसरों, प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और अनुभवी स्कूल-शिक्षकों के निदेशन में 20 विज्ञान अध्ययन वर्गों में—छः गणित में, चार भौतिकी में व पाँच-पाँच जीव-विज्ञान और रसायन में—विज्ञान और गणित पाठ्य-सामग्री का भी विकास किया जा रहा है। ये वर्ग स्कूल शिक्षा के पूर्ण माध्यमिक स्तर के लिए विभिन्न विषयों में पाठ्य-सामग्री का उत्पादन करने में लगे हुए हैं। इस वर्ष जीव-विज्ञान और रसायन अध्ययन वर्गों ने मिडिल-स्कूल स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकों और शिक्षक मार्गदर्शिकाओं को अंतिम रूप दिया तथा कक्षा 5 से 8 तक की जीव-विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के तीन खंडों के प्रयोगात्मक-संस्करण, इन खंडों की शिक्षक-मार्गदर्शिकाएँ, मिडिल स्कूल के लिए रसायन की पाठ्यपुस्तक का एक खंड, कक्षा 6 व 7 के लिए रसायन के प्रयोगशाला-मैन्युअल के दो खंड, और कक्षा 6 व 7 के लिए रसायन में शिक्षक-मार्गदर्शिका के दो खंडों का प्रकाशन किया। मिडिल स्कूलों के लिए एक नमूना-किट और चार्टों तथा फ़िल्म-स्ट्रिपों के एक सेट के लिए प्रारंभिक नमूने का

विकास भी किया जा चुका है। जीव-विज्ञान अध्ययन वर्गों ने दो सहायक रीडरें तैयार कीं। भौतिकी के क्षेत्र में, संबद्ध वर्गों ने प्रथम वर्ष की सामग्री के तीन प्रकारांतरों को अंतिम रूप दे दिया है और कक्षा 6 की एक पाठ्यपुस्तक प्रकाशनाधीन है। गणित के वर्गों ने प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए दो निर्देश-पुस्तिकाओं को अंतिम रूप दे दिया है। मिडिल स्तर के तीसरे वर्ष के लिए रेखागणित में पाठ्य-सामग्री और शिक्षक-मार्गदर्शिका को अंतिम रूप दिया जा चुका है। गणित में संपूर्ण उच्च स्कूल स्तर के लिए प्रतिरूपी पाठ्य-विवरण विकसित करने का प्रारंभिक कार्य भी पूर्ण किया गया था।

विज्ञान की रीडरों के तीन शीर्षक प्रकाशित किए गए थे, और 'डिस्कवरी ऑफ दि ओशन्स' नामक चौथा शीर्षक मुद्रणालय में है। सात और शीर्षकों को अंतिम रूप दिया जा चुका है जिनमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

(1) **दि फ्लावरिंग प्लांट्स ऑफ हिमालयाज़।**
(2) **इन्सैक्ट लाइफ।**
(3) **राक्स अनफोल्ड दि पास्ट।**
(4) **बर्ड्स एंड बर्ड वाचिंग।**
(5) **दि स्टोरी ऑफ ट्रान्सपोर्ट।**
(6) **ऐनिमल्स एंड प्लांट्स ऑफ इंडिया।**
(7) **कामन इन्सैक्ट्स।**

उपरोक्त के साथ-साथ, विभिन्न विज्ञान-प्रसंगों पर शिक्षण-एककों के विकास का कार्यक्रम भी विस्तार केन्द्रों के सहयोग से विकसित किया गया था।। इस वर्ष रसायन में 15 एकक, भौतिकी में 27 और जीव-विज्ञान में 18 एककों की छान-बीन की गई थी, तथा 43 एककों को अंतिम रूप दिया गया था।

सामाजिक अध्ययन

स्वाधीनता के पश्चात सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन को अतिरिक्त महत्व उपलब्ध हो चुका है। राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक नागरिकता के विकास जैसे महत्व और अन्य उद्देश्यों के प्रकाश में राष्ट्रीय परिषद् ने इस क्षेत्र में नया पाठ्यक्रम प्रारंभ कर दिया है। अध्ययनों और विकास-कार्य के परिणाम-स्वरूप परियोजना अनेक महत्वपूर्ण चरणों से गुजर चुकी है और पूर्ण स्कूल स्तर के लिए इस योजना के अंतर्गत सामग्री निर्मित हो चुकी है।

प्राथमिक स्तर पर, देश के विभिन्न भागों में लोगों के जीवन पर विशेष बल देते हुए एक समाकलित मार्ग को अंगीकार किया जा चुका है। मिडिल स्तर पर, पृथक विषय का मार्ग अपनाया गया है। 1 से 11 तक की कक्षाओं के लिए सामाजिक अध्ययन में प्रारूप-पाठ्यविवरण विगत वर्षों में पहले ही विकसित किया जा चुका था। उसके पश्चात पाठ्यपुस्तकें, निर्देश-पुस्तिकाएँ, शिक्षक-मार्ग दर्शिकाएँ आदि भी विकसित की गई थीं। इस वर्ष कक्षा 6 और 7 के लिए भूगोल की एक-एक, कक्षा 6 के लिए नागरिक शास्त्र की एक, उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए सामाजिक अध्ययन में एक, और कक्षा 5 में सामाजिक-अध्ययन के लिए एक पाठ्यपुस्तक सहित अनेक पाठ्यपुस्तकों को विकसित किया गया।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों के लिए इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र में अनेकानेक शिक्षण-एककों का भी विकास किया गया था। इनको इसी उद्देश्य से आयोजित दो कार्यशाला में पुनरीक्षित किया गया था और अंतिम रूप दिया गया था।

मातृ भाषा

प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य बच्चे में सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, सोचने और भाषा-विश्लेषण की योग्यताओं का विकास करना होना चाहिए। उसमें नैतिक गुणों को विकसित करने का सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए। उच्चतर कक्षाओं में, उसको मातृभाषा में साहित्य से परिचित कराने का यत्न किया जाना चाहिए। सीखने वाले के लिए बहुत सक्रिय भाग प्रारंभ से ही निश्चित करने में होता है, और उसको न केवल विशदता के लिए अपितु मौखिक और लिखित रूप में अभिव्यक्ति के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए। परिषद् ने मातृ-भाषा में पाठ्यक्रम-विकास के क्षेत्र में इसी आधारभूत पद्धति को अपनाया है। पठन सन्नद्धता परीक्षण, हिन्दी पाठ्यपुस्तकें और शिक्षक-संस्करण तैयार किए गए हैं। कार्य-पुस्तकें और हस्त-लेख पुस्तकें भी

तैयार की गयी हैं। इससे पूर्व हिन्दी में कक्षा 1 से 8 के लिए एक मार्गदर्शक-पाठ्य विवरण तैयार किया गया था। इस वर्ष कुछ और सामग्री भी तैयार की गई थी जिसमें कक्षा 3, 4, व 5 की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के शिक्षक-संस्करण, कक्षा 4 की हिन्दी कार्य पुस्तक तथा राष्ट्र-भारती-भाग 2 के शिक्षक-संस्करण सम्मिलित हैं। अनेक शिक्षण-एकक तैयार किए गए थे और उनको अंतिम रूप दिए गए थे। चार पूरक रीडरों की पाण्डुलिपियों को भी अंतिम रूप दिया गया था।

दूसरी भाषाएँ

परिषद् द्वारा इस क्षेत्र में किया गया कार्य प्रमुख रूप में हिन्दी और अंग्रजी शिक्षण है। सुनने, बोलने, पढ़ने और इन योग्यताओं को एक रीतिबद्ध-ढंग पर विकसित करने में सहायक हो सकने वाली सामग्री के उत्पादन से संबंध रखने वाली विभिन्न भाषाई योग्यताओं के वर्गीकरण पर बल दिया गया है। सर्वप्रथम मिडिल स्तर की प्रारंभिक कक्षा के लिए आन्ध्र प्रदेश, मैसूर, बंगाल और उड़ीसा सहित राज्यों के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तकें तैयार की जा रही हैं। अनेक पाठ और अल्पकालीन तीव्र-पाठ्यक्रम तथा माध्यमिक स्कूल-छात्रों, शिक्षकों, अध्यापक-शिक्षकों तथा शैक्षिक-प्रशासकों के लिए एक-एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं। दूसरी भाषा-शिक्षण के लिए कार्यक्रमित अवबोधन-तकनीक का उपयोग कर स्वयं-अनुदेशक कार्यक्रमों पर भी यत्न किए जा रहे हैं। परिषद् द्वारा दूसरी भाषाओं में अनुदेशक-सामग्री को तैयार करने के कार्यक्रम को समन्वित करने के लिए एक विषय निर्वाचन-समिति की स्थापना भी इस क्षेत्र में एक महत्वशाली कार्य है। प्रथम चरण के रूप में, चुने हुए भाषाई क्षेत्रों में दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी, तमिल और अंग्रजी के अध्ययन के लिए सामग्री तैयार करने का निश्चय किया गया है। भारत में तीन प्रसिद्ध विश्वविद्यालय केन्द्रों के सहयोग से प्रस्तावित इस परियोजना के लिए रुपरेखांकन इस वर्ष तैयार हो चुका है जिससे अगले वर्ष शीघ्र ही कार्य आगे बढ़ सके।

शिक्षक प्रशिक्षण

प्राथमिक और मिडिल स्कूलों में अप्रशिक्षित स्कूल-शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए समरूप पाठ्यक्रमों की योजना के विवरण तैयार करने के लिए राज्य शिक्षा संस्थानों का एक सम्मेलन कलकत्ता में आयोजित किया गया था।

अनेक राज्यों से अध्यापक प्रशिक्षकों का एक अन्य वर्कशाप गठित किया गया था और प्रारंभिक शिक्षक-प्रशिक्षण के लिए एक पाठ्य-विवरण का प्रारूप बना लिया गया है। यह राज्यों को प्रयोग के लिए भेजा जायगा। सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों के सेवा-पूर्व प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया था और प्रकाशन के लिए भेजा गया था। इस पाठ्यक्रम पर अध्यापक शिक्षा के लिए बृहद् निर्देश पुस्तिका तैयार की जा रही है।

माध्यमिक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में छात्र-शिक्षण और मूल्यांकन के सुधार के लिए चार-गोष्ठियों का गठन किया गया था जिसमें 128 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया था।

बी० एड० कार्यक्रम के संशोधन के संबंध में विद्यमान कार्यक्रम में विभिन्न अंतर्वस्तुओं की उपयोगिता और अनुपयोगिता के बारे में एक प्रश्नावली शिक्षकों, प्रिन्सिपलों, और निरीक्षकों आदि को भेजी गई थी। प्राप्त आधार सामग्री का विश्लेषण किया जा रहा है।

कला और शिल्प

कला-शिक्षा और कार्य अनुभव सहित शिल्पों में एक पाठ्यक्रम-योजना को अंतिम रूप दिया गया था।

अर्थशास्त्र

विभिन्न राज्यों में प्रचलित पाठ्य-विवरणों का विश्लेषण करने के साथ उच्च जोर उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में अर्थशास्त्र के लिए एक पाठ्य-विवरण तैयार किया गया था। इसका विवेचन प्रांगण में हुई छः दिनों की विचार-गोष्ठी में किया गया था।

समन्वित पाठ्यक्रम योजना

संपूर्ण पाठ्यक्रम की एक बृहद योजना विकसित की गई थी। इस संपूर्ण समन्वित योजना के ढांचे में ही पृथक-पृथक विषयों के पाठ्य-विवरणों का संशोधन किया जा रहा है।

परीक्षाओं का परिष्कार

परीक्षा-सुधार का मूल-प्रयोजन शिक्षा में गुणात्मक-परिष्कार करना है जिसका अर्थ है कि विविध उपकरणों तथा तकनीकों को विकसित किया जाय और छात्र उन्नति के प्रतिभात्मक व्यक्तित्व, सामाजिक और मनोचालक पक्षों को आवश्यकीय रूप में प्रभावित करने में उनका उपयोग किया जाय। अवबोधन-कठिनाइयों का सही-आकलन और उपचारी उपायों का उपयोग भी इस कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। जिस किसी भी राज्य या प्रदेश में आजकल उनका आयोजन किया जा रहा है, विश्वसनीयता और वैधता की दृष्टि से स्कूल-स्तर की विभिन्न सामान्य परीक्षाओं में सुधार करना भी इस कार्यक्रम का एक उद्देश्य है। इस प्रकार, इस कार्यक्रम का निहित प्रयोजन मूल्यांकन के औपचारिक और अनौपचारिक पक्ष, दोनों, को ही अधिक बृहद् और प्रभावी बनाना है।

पिछले कुछ वर्षों में, परिषद् के पर्याप्त प्रयत्न और साधन इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम की दिशा में प्रेरित हुए हैं जिनके परिणामस्वरूप आवश्यक सामग्री का विकास किया गया है और राज्य-अभिकरणों को परीक्षा-सुधार के उनके कार्यक्रमों में सामग्री, तकनीकी-परामर्श तथा प्रशिक्षण-कार्यक्रमों के माध्यम से सहायता प्रदान की गई है। इस कार्यक्रम को प्रतिवेदन-वर्ष में भी जारी रखा गया।

परीक्षण-सामग्री को तैयार करने और संशोधन करने के लिए एक अखिल भारतीय कार्यशाला का गठन जबलपुर में किया गया था और अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, सामाजिक-अध्ययन तथा विज्ञान के विषय में सामग्री का निर्माण किया गया था। राजस्थान मंडल के लिए नागरिक शास्त्र, कृषि, बहीखाता, संस्कृत, गृह-विज्ञान, ललित-कला, बीमे के अवयव और वाणिज्य में नमूना परीक्षण-सामग्री के विकास के लिए दस कार्यशील वर्गों का गठन किया गया था और इन विषयों में नमूना प्रश्न-पत्रों तथा एकक-परीक्षणों की विवरणिकाएँ तैयार की गई थीं। आंध्र प्रदेश के लिए एक कार्यशील वर्ग का गठन किया गया था और तेलुगू व उर्दू में नमूना-मूल्यांकन सामग्री तैयार की गई थी। हिन्दी में परिषद् की चौथी कक्षा की पाठ्यपुस्तक के आधार पर नमूना प्रश्न-पत्रों व शिक्षकों के लिए अनुदेशों के मैन्युअल को तैयार करने के लिए दो कार्यशील वर्गों का गठन किया गया था। इस वर्ष, विभिन्न स्कूल-विषयों में 2678 परीक्षण-मद तथा 118 एकक परीक्षण तैयार किए गए और परिषद् की परीक्षण-सामग्री के संग्रह में जमा कर दिए गए।

इस प्रतिवेदन-वर्ष में राज्य-अभिकरणों को परीक्षा-सुधार के उनके कार्यक्रम में दी गई सहायता का संक्षिप्त विवरण विस्तार और क्षेत्र-सेवाओं के अध्याय में दिया गया है। उसके अतिरिक्त, दिल्ली में राष्ट्रीय-स्तर पर शिक्षा में दो-महीने के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया गया था।

श्रव्य-दृश्य साधन

परिषद् पिछले अनेक वर्षों से संपूर्ण स्कूल स्तर पर शिक्षा में श्रव्य-दृश्य साधनों के उपयोग का प्रवर्तन करने के कार्यक्रम पर कार्य करती रही है। इसमें फलैनल ग्राफ किट, ग्राफिक किट आदि जैसे अव्ययशील तकनीक भी सम्मिलित हैं जो स्कूल-स्तर पर अत्यंत लाभकारी हैं। इसके साथ ही, विभिन्न विषयों में फिल्म-स्ट्रिप, चार्ट, डायग्राम तथा अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री का उत्पादन भी किया गया है। राज्यों के लोगों के लिए इन तकनीकों और सामग्रियों पर आधारित अनेक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का गठन भी किया गया है जिनका उल्लेख प्रशिक्षण-कार्यक्रमों के अनुभाग में भी किया जाएगा। इस वर्ष, स्कूलों में उपयोग के लिए 'बाल-रामायण' पर एक 16 एम० एम० फिल्म का निर्माण किया गया था।

(1) 'नेशनल इंस्टीच्यूट आफ ऐज्यूकेशन' (2) 'जम्मू एंड कश्मीर' (3) 'साइंस इन ऐब्रीडे लाइफ' (4) 'आडोविजुअल ऐज्यूकेशन' और (5) 'बर्थ ऑफ नेच्युरल नंबर्स शीर्षक' पांच फिल्म-स्ट्रिपें निर्माणा-

धीन हैं। श्रव्य-दृश्य विभाग ने गांधी शताब्दी समारोहों के संबंध में 'महात्मा गांधी' पर एक 35 एम०एम० की फिल्म-स्ट्रिप भी निर्माण की थी।

प्रौढ़ शिक्षा

वृत्तिमूलक साक्षरता कक्षा के आदर्शरूप शिक्षण सामग्री के रूप में हिन्दी में 'किसान साक्षरता योजना-पहली पुस्तक' का प्रकाशन कर जो आदर्श कार्य किया गया था, वह इस वर्ष भी जारी रखा गया। इस पुस्तक का स्वागत संबद्ध क्षेत्र में अति उत्साह से किया गया था। केवल उत्तर प्रदेश सरकार ने ही इसकी 10000 प्रतियां विभिन्न जिलों में वितरण के लिए तैयार कराई थीं। क्षेत्र से प्राप्त प्रतिपुष्टिकर्ता आधार सामग्री के प्रकाश में पुस्तक को आगे और भी परिष्कृत किया गया था। कुल मिलाकर, पुस्तक की लगभग 23,000 हजार प्रतियां उत्तर प्रदेश, हरयाणा और मध्यप्रदेश के हिन्दी भाषी राज्यों में वितरित की गई हैं। उसी प्रकार की पंजाबी पुस्तक की 3000 प्रतियाँ भी छापी गई थीं, यद्यपि संस्करण लघु-आकार का था। इसके अतिरिक्त विभाग ने संबद्ध राज्यों से संबद्ध संस्थाओं की सेवाएँ प्राप्त कर वृत्तिमूलक साक्षरता के लिए ऐसी ही पुस्तकों के कन्नड़, बंगला, गुजराती, उड़िया, तमिल और तेलुगू संस्करणों के निर्माण को भी प्रवर्तित किया। वृत्तिमूलक साक्षरता कक्षाओं के उपयोग के लिए पूरक पाठ्य सामग्री की श्रृंखला की योजना भी बनाई गई है। इस श्रृंखला में इस वर्ष खेती की अधिक उपज देने वाली प्रकारों के संबंध में हिन्दी में पाँच लघु पुस्तकें प्रकाशित की गई थीं।

वार्षिकी और पत्रिकाएँ

इस वर्ष में प्रथम वार्षिकी का संशोधित संस्करण 'भारत में शिक्षा का पुनरीक्षण' तथा 'शैक्षिक अनुसंधान' पर तृतीय वार्षिकी प्रकाशित की गई थीं। माध्यमिक शिक्षा पर वार्षिकी का अंतिम रूप में संपादन किया जा रहा था। शैक्षिक-योजना, प्रशासन व वित्त पर भी पर भी वार्षिकी-रचना का कार्य प्रारंभ किया गया था। इन वार्षिकी-विकास कार्यक्रम की योजना और मार्गदर्शन के लिए भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के परामर्शदाता श्री जे. पी. नाइक की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। परिषद् सन् 1968-69 में अर्ध-वार्षिक अनुसंधान पत्रिका 'इंडियन एज्यूकेशनल रिव्यू,' द्वै-मासिक 'राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पत्रिका', और 'त्रैमासिक पत्रिकाएँ' 'स्कूल-साइंस' और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान समाचार-पत्रिकाओं का प्रकाशन करती रही।

शैक्षिक साहित्य का प्रकाशन

उपरोक्त विभिन्न विकास-कार्यों के परिणाम-स्वरूप अनुदेशक सामग्री वाली अनेक पाठ्यपुस्तकें, वार्षिकी, पत्रिकाएँ, माध्यमिक स्कूलों के लिए पूरक शैक्षिक सामग्री, अनुसंधान-मोनोग्राफ, प्रतिवेदन और विवरणिकाएँ तथा विदेशी पुस्तकों के सस्ते संस्करण तैयार किए जाते हैं। इसका निहितार्थ परिषद् के प्रकाशन एकक के माध्यम से प्रकाशन कार्य का प्रचार-प्रसार है। इसमें राज्य सरकारों को उनकी आवश्यकतानुसार इन सामग्रियों को ग्रहण करने या अनुकूलन करने के लिए उनकी सहायता करना भी अभीष्ट है। अधिक राज्यों और संघ-क्षेत्रों ने अपने स्कूलों में इन पाठ्यपुस्तकों को लगाया है। इसका संक्षिप्त विवरण विस्तार और क्षेत्र-सेवाओं के अध्याय में दिया गया है। इसके साथ ही, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन और भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद् ने भी राष्ट्रीय परिषद् की पाठ्यपुस्तकों को अंगीकार कर लिया है। सन् 1968-69 वर्ष में प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों, पूरक शैक्षिक-सामग्री आदि की सूची परिशिष्ट झ में दी गई है।

5. शिक्षण कार्यक्रम

शिक्षक समस्त शैक्षिक विकास का केन्द्र है। अनुसंधान से प्राप्त सारा ज्ञान, अथवा कम से कम इसकी समस्त व्यावहारिक उपलब्धियाँ छात्र तक शिक्षक के माध्यम से पहुँच जाती हैं। शिक्षा के श्रेयस्कर और द्रुततर विकास के लिए इस प्रक्रिया में शिक्षक के अधिक गहन अवगाहन के लिए उसे शब्दशः केन्द्र ही कहने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। अतः परिषद् ने इन सभी वर्षों तक नीचे किए गए विवेचन के अनुसार अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों और अध्यापक-शिक्षकों की सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा की ओर अपना सर्वोत्तम ध्यान दिया है।

सेवा-पूर्व शिक्षा

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा परिचालित अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में शिक्षकों के संपूर्ण वृत्तिमूलक विकास के लिए—उनके विशिष्ट विषय-क्षेत्रों तथा शिक्षण-तकनीकों, दोनों के लिए ही—विज्ञान, औद्योगिकी, अंग्रेजी और वाणिज्य में चारवर्षीय समन्वित पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इन पाठ्यक्रमों को 1968-69 में जारी रखा गया था, अपवाद केवल यह रहा कि प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश बंद कर दिया गया था। शिक्षा-सत्र में, उनके चार-वर्षीय पाठ्यक्रम में कुल छात्र-संख्या 1421 थी जिसमें विज्ञान की 788, प्रौद्योगिकी की, 212 अंग्रेजी की 258 और वाणिज्य की 163 छात्र-संख्या थी। इसके साथ ही, भुवनेश्वर और अजमेर में औद्योगिक शिल्प में तीन-वर्षीय और दो-वर्षीय पाठ्यक्रमों का आयोजन भी किया गया था जिनमें क्रमशः 18 व 5 छात्रों को प्रवेश दिया गया था। इन महाविद्यालयों ने विज्ञान, वाणिज्य और कृषि में स्नातक-शिक्षकों के लिए विशेष एकवर्षीय पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया था। इन पाठ्यक्रमों में प्रविष्ट शिक्षार्थियों की इस वर्ष संख्या 398 थी जिनमें वाणिज्य के 60, कृषि के 57 और विज्ञान के 281 शिक्षणार्थी थे। भोपाल और भुवनेश्वर में एम. एड. पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया था। जिसमें 11 छात्रों को प्रवेश दिया गया था।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के घटक-भाग केन्द्रीय शिक्षा संस्थान ने बी. एड. के पूर्णकालिक पाठ्यक्रमों को जारी रखा। इस वर्ष इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने वाले छात्रों की संख्या क्रमशः 134 व 24 थी। संस्थान अपने पीएच. डी. कार्यक्रम को भी जारी रखे रही और दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा इस उपाधि के लिए दो छात्रों को प्रवेश दिया गया।

परिषद् देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी को दूर करने की दृष्टि से सभी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में बी. एड. उपाधि के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाशों में और दो ग्रीष्मकालीन अवकाशों के मध्य दस महीनों में पत्राचार के माध्यम से पूर्णकालिक प्रशिक्षण का आयोजन करती है। 1968-69 वर्ष में लगभग 1200 शिक्षक प्रशिक्षित किए गए थे। इसी प्रकार, दिल्ली के केन्द्रीय शिक्षा संस्थान में बी. एड. और एम. एड. उपाधियों के लिए क्रमशः पत्राचार पाठ्यक्रम और अंशकालीन सांध्य पाठशाला भी जारी रखे गए थे जिनमें क्रमशः 152 व 22 छात्रों ने प्रवेश लिया था।*

सेवाकालीन शिक्षा

शिक्षक-प्रशिक्षण एक या दो-वर्षीय सेवा पूर्व

*राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की शासी निकाय ने 1968-69 शिक्षा-सत्र प्रारंभ होने से पूर्व केन्द्रीय शिक्षा संस्थान का कार्यभार दिल्ली विश्वविद्यालय को हस्तांतरित करने का निश्चय कर लिया। किन्तु, वह हस्तांतरण कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सका, और उस संबंध में विश्व-विद्यालय के साथ आवश्यक कार्रवाई चल रही है।

पाठ्यक्रमों से ही समाप्त नहीं हो जाता। शिक्षकों की वृत्तिमूलक क्षमता के अनवरत विकास के लिए सावधिक अंतरों पर सेवाकालीन-शिक्षा अनिवार्य है। परिषद् ने अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से शिक्षकों और शैक्षिक-क्षेत्रों में अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों तथा अध्यापक-शिक्षकों, स्कूल-निरीक्षकों और मुख्याध्यापक जैसे शैक्षिक-प्रशासकों के लिए विभिन्न अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन सेवाकालीन पाठ्यक्रमों को विकसित किया है।

1968-69 वर्ष में आयोजित ऐसे कार्यों का एक संक्षिप्त लेखा नीचे दिया जाता है :

मानव की और सामाजिक विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थान

इस वर्ष नौ ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन किया गया था जिनमें प्रत्येक का समय लगभग पांच सप्ताह था। इनमें से चार भूगोल के माध्यमिक-स्कूल-शिक्षकों के लिए थे। अन्य पांच से संबंधित व्यक्ति अध्यापक शिक्षक थे। विषय भाषा-विज्ञान और भाषा-और भाषा-शिक्षण, अवबोधन, अभिप्रेरण और वर्ग प्रक्रियाएँ, अनुसंधान विधि-तंत्र और प्रयोगात्मक रूपरेखांकन, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, और सामाजिक शिक्षा थे।

विज्ञान ग्रीष्मकालीन संस्थान

आधुनिक विश्व में विशेषकर भारत जैसे विकासोन्मुख राष्ट्र में विज्ञान-शिक्षा के महत्त्व के संबंध में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। स्कूल-स्तर की विज्ञान-शिक्षा में सुधार के लिए तीन महत्त्वपूर्ण कारक हैं—अभिनव धारणाओं को समाविष्ट कर पाठ्यक्रम का संशोधन, अनुदेशक सामग्री की तैयारी (नए पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें, शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ आदि), और शिक्षकों का सतत अभिस्थापन। हम राष्ट्रीय परिषद् द्वारा नए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य अनुदेशक सामग्री के विकास के लिए उठाए गए महत्त्वपूर्ण चरणों का उल्लेख पूर्व-पृष्ठों में पहले ही कर चुके हैं। राष्ट्रीय परिषद् ने इन विषयों में प्रचलित विकासों की पूर्ण और आद्यतन जानकारी से विज्ञान और गणित के शिक्षकों को सन्नद्ध करने के लिए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से, विज्ञान और गणित के शिक्षकों के ग्रीष्मकालीन संस्थानों को गठित करने के एक बड़े कार्यक्रम को प्रारंभ किया है कालीन संस्थान लगभग पांच से छः सप्ताह तक चलते हैं और इनका निदेशन एक विश्वविद्यालय प्राध्यापक द्वारा विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के साधकों की सहायता से होता है। 1968 वर्ष में ऐसे 61 संस्थानों का गठन किया गया था। सन् 1963 से, जबकि केवल चार संस्थानों से योजना प्रारंभ हुई थी, अब तक 223 संस्थानों का आयोजन किया जा चुका है जिनमें 8982 शिक्षकों ने भाग लिया था।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अनुसंधान-सहचारिता

राष्ट्रीय परिषद् ने शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में मुख्य कार्मिकों के रूप में प्रशिक्षित विशेषज्ञों का सतत प्रवाह बनाए रखने के लिए 1967-68 में एक शिक्षा-वर्ष की अवधि का डिप्लोमा-पाठ्यक्रम प्रारंभ किया था। इकतीस छात्रों ने 1967-68 वर्ष में इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया था। यह पाठ्यक्रम 1968-69 वर्ष में भी जारी रखा गया था किन्तु इसे शैक्षिक संस्थानों और राज्यों के शिक्षा विभागों द्वारा औपचारिक रूप में प्रेषित प्रत्याशियों के लिए ही सीमित रखा गया है। विशिष्टता-प्राप्ति के लिए दो क्षेत्र प्रस्तुत किए गए हैं। (1) मार्ग-दर्शन और परामर्श जिसमें 13 प्रत्याशियों को प्रवेश दिया गया था और (2) अध्यापक शिक्षा जिसमें 7 लोगों को प्रवेश दिया गया था।

अन्य अल्पकालीन पाठ्यक्रम

पिछले वर्षों की ही भांति, 1968-69 वर्ष में भी शैक्षिक विस्तार और शैक्षिक मूल्यांकन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया था जिनमें प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि दो मास थी।

कार्यक्रमित अवबोधन तुलनात्मक दृष्टि से निकट भूतकाल का तकनीक है, किन्तु भारतीय स्थिति में इसका सुपरिणाम हुआ है। इस तकनीक पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में कुछ प्रारंभिक कार्य किया गया है और देश के विभिन्न भागों में प्रमुख स्थानों पर कुछ साधक व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता अनुभव की जाती है। राज्यों के शिक्षा-संस्थानों और प्रशिक्षण - महाविद्यालयों से सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों के लिए दो चरणों में एक कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसकी कुल अवधि 60 दिन थी और जो इस प्रकार के क्रम में तीसरी थी। इसका उद्देश्य भाग लेने वाले व्यक्तियों को विज्ञान, गणित और भाषाओं में कार्यक्रमित-अवबोधन-सामग्री-लेखन का अनुभव प्रदान करना था।

भारत सरकार के अनुरोध पर परिषद् द्वारा किए जा रहे कृषक-शिक्षा और वृत्तिमूलक साक्षरता के कार्यक्रम के संबंध में राज्यों के प्रमुख व्यक्तियों को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रौढ़ साक्षरता शिक्षकों को मार्गदर्शन और परि-निरीक्षण के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन इस वर्ष किया गया था। प्रत्येक पाठ्यक्रम दो सप्ताह का था। अभिप्रेरण-विकास में आठ प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे जिनमें122 शिक्षकों/अध्यापक शिक्षकों/मुख्याध्यापकों/विस्तार समन्वयकर्ताओं ने भाग लिया था।

श्रव्य-दृश्य शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में भी अनेक अन्य अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे जिनका संक्षिप्त वर्णन नीचे किया गया है :

1. ग्राफिक-उपकरणों, त्रिविमिनीय शिक्षण-उपकरणों और फोटो-सामग्री तैयार करने में अध्यापकों/शिक्षकों के लिए छः सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
2. श्रव्य-दृश्य शिक्षा के अनुशासन के प्राथमिक, सैद्धांतिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों के विकास के लिए और शिक्षण स्थिति में अवबोधन के हेतु ऐसे उपकरणों के उपयोग के लिए अध्यापक शिक्षकों के लिए छः सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
3. पाठ्यक्रम से संबंधित परियोजित उपकरणों, फोटोग्राफों, स्लाइडों और फिल्म-स्ट्रिपों की तैयारी में अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए छः सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
4. श्रव्य-दृश्य उपकरणों के प्रवर्तन के हेतु अधिकांशतः अध्यापकों में से भारत स्काउट्स और गाइड्स के चुने हुए नेताओं के लिए दो सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
5. नई दिल्ली स्थित एशियाई योजना और प्रशासन संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों के लिए भाषा-प्रयोगशाला द्वारा अंग्रेजी में पांच सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
6. कृषक साक्षरता कार्यक्रमों के कार्यकारी जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान शिक्षा वृत्तियाँ (प्रवर एवं अवर शिक्षा-वृत्तियाँ)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सन् 1965 में शिक्षा में उच्च अध्ययन और अनुसंधान कार्य के लिए सुअवसर प्रदान करने की दृष्टि से सराहनीय प्रत्याशियों को प्रवर एवं अवर अनुसंधान शिक्षा वृत्तियाँ देने की एक योजना प्रारंभ की। प्रवर एवं अवर अनुसंधान शिक्षा वृत्तियों का मूल क्रमशः रु० 500-00 व रु० 300-00 मासिक है। प्रत्येक शिक्षावृत्ति 2 वर्ष के लिए होती है जिसे, यदि आवश्यक समझा जाए, तो एक वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है। परिषद् द्वारा चुने गए फेलो को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के इस या उस विभाग से संबद्ध कर दिया जाता है और वे वरिष्ठ कर्मचारी वर्ग के मार्गदर्शन में मान्य प्रकरणों पर पूर्णकालिक अनुसंधान कार्य करते हैं। फेलो द्वारा किए गए अनु-

संधान के परिणाम राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की संपत्ति होंगे। किन्तु, परिषद् उन व्यक्तियों को इस बात की अनुमति दे सकती है कि वे उपाधि अथवा डिप्लोमा ग्रहण करने के लिए अपने अनुसंधान कार्य के किसी अंश को किसी विश्वविद्यालय या मान्यताप्राप्त संस्थान के समक्ष प्रस्तुत कर दें। प्रतिवेदन-वर्ष में 5 प्रवर और 2 अवर फेलो नीचे दिए गए विवरण के अनुसार थे। इन सात में से, पहले 5 प्रवर फेलो हैं और अंतिम 2 अवर फैलो हैं।

क्रम संख्या	नाम	अनुसंधान के लिए प्रकरण
1.	श्री पी० वी० कुलकर्णी	'बीजगणित के एक प्रकरण में कार्यक्रमित अवबोधन सामग्री का विकास करना।'
2.	डाक्टर जी० राजशेखरन	'मानव-साधनों के विकास की नीति'।
3.	श्री आर० श्रीनिवास	'कुछ विशेष वर्ग-श्रेणियों से संबंधित माध्यमिक स्कूल-बच्चों की भाषाई-योग्यताओं और शैक्षिक-उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।'
4.	डा० (श्रीमती) आशा कलकर मुंडले	(i) दूसरी भाषा के रूप में मराठी सीखने के लिए एक पुस्तक-रचना। (ii) निहालों और उनकी भाषाओं का अध्ययन। (iii) कोर्कुओं की आर्थिक और शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन। (iv) अवबोधन सामग्री।
5.	डा० डी० एन० आचार्य	'अपने स्कूलों में इतिहास शिक्षण की विधि पर कार्य करना है।'
6.	कु० मधु सहदेव	स्कूल-बच्चों के व्यवहार पर घरेलू पर्यावरण के प्रभाव का सर्वेक्षण।'
7.	श्रीमती प्रभा रामलिंगस्वामी	'वेश्लर प्रौढ़-बुद्धि मान का अनुकूलन'।

6. विस्तार एवं क्षेत्र सेवाएँ

हमारा मौलिक और प्रयुक्त अनुसंधान चाहे कितना ही उत्तम क्यों न हो, जब तक उनकी उपलब्धियाँ क्षेत्र में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों तक नहीं पहुँचती, तब तक वे निष्फल ही हैं। चूंकि अनुसंधान का संपूर्ण प्रयोजन शिक्षक की सहायता से शैक्षिक विचारों और अभ्यासों में प्रगति का प्रयोग करना है, इसलिए विचारों की उपयोगिता उनके द्वारा क्षेत्र में हुए प्रभाव से नापी जाएगी। अतः परिषद् की मुख्य गतिविधियों में से एक विस्तार और क्षेत्र सेवा है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के क्षेत्र-कार्यक्रमों और राज्यों के शिक्षा विभागों तथा अन्य अभिकरणों के मध्य उत्तम समन्वय करने के लिए क्षेत्र-एकक स्थापित किए गए हैं। इस समय हैदराबाद, बीकानेर और शिलाङ में एक-एक क्षेत्र-एकक कार्य कर रहे हैं।

परिषद् राज्यों द्वारा गुणात्मक सुधार के कार्यक्रमों की योजना बनाने, उनको प्रयोग करने एवं उनका मूल्यांकन करने में राज्यों के साथ अधिकाधिक सहयोग कर रही है। राज्य स्तर के संस्थानों के साथ निकटतर कार्य-संबंध स्थापित किए जा रहे हैं।

विस्तार एवं क्षेत्र सेवाएँ विविध गतिविधियों के माध्यम से की जाती हैं। उनमें चुने हुए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यशील विस्तार-केन्द्रों के माध्यम से विस्तार सेवाओं का गठन, राज्य सरकारों को उनके पाठ्य विवरण और परीक्षा-अभ्यासों में सुधार करने में सहायता, शिक्षकों को उनकी समस्याएँ प्रस्तुत करने और प्रशिक्षण के उनके अपने अनुभवों आदि के आधार पर उनका हल प्रस्तुत करने के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान करना, स्कूल-पुस्तकालयों के वृत्तिमूलक लाभ में सुधार करने जैसी अग्रगामी परियोजनाएँ प्रारंभ करना, परीक्षित अच्छे अभ्यासों का प्रसार करना महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है। विज्ञान और गणित में प्रतिभा का परिचय पाने और उसे शिक्षा देकर योग्य बनाने में 'विज्ञान प्रतिभा खोज' की योजना सहायक है। अनुसंधान उपलब्धियों को न केवल प्रकाशनों के माध्यम से क्षेत्र तक पहुँचाने के यत्न किए जाते हैं अपितु शिक्षण अवबोधन स्थिति में उनके प्रवर्त्तन में भी सक्रिय सहायता दी जाती है।

परिषद् परीक्षा-सुधार को लागू करने के मामले में अधिक राज्यों में पहुँच चुकी है। इसी प्रकार, परिषद् ने अपने द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों/पाठ्यपुस्तक सामग्रियों के माध्यम से संशोधित पाठ्यक्रम के लाभ क्षेत्र तक पहुँचाने का यत्न किया है।

परिषद् ने शैक्षिक फिल्मों और फिल्म-स्ट्रिपों का एक अच्छा संग्रह एकत्र कर लिया है जिनको वह देश में स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों को उधार देती रहती है। प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में, वित्तीय और शैक्षिक दोनों ही प्रकार की सहायता प्रौढ़ औद्योगिक कर्मचारियों आदि की शिक्षा हेतु सन् 1967-68 में बंबई में स्थापित श्रमिक विद्यापीठ को दी जाती रही। विभिन्न गतिविधियों से अर्जित महत्त्वपूर्ण अनुभवों का शैक्षिक क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों के साथ आदान-प्रदान, साहित्य-विनिमय राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने और मुलाकातों के माध्यम से होता है।

उपरोक्त ये सभी गतिविधियाँ सन् 1968-69 में जारी रखी गई थीं।

जो कार्य किए गए उनका सारांश-पुनरारंभ नीचे पैराग्राफों में दिया जाता है :

विस्तार सेवा केन्द्र

पिछले वर्षों की भांति ही, देश के माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण संस्थानों में स्थित 135 विस्तार-सेवा केन्द्रों को सहायक-अनुदानों के माध्यम से तकनीकी मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता दी गई थी जिससे वे अपने समीप के स्कूलों में विस्तार सेवाएं प्रदान कर सकें। राज्य अधिकारियों द्वारा प्रस्तावित मुख्य विस्तार-कार्मिकों के दस सम्मेलन 1968-69 वर्ष में आयोजित किए गए थे। इन सम्मेलनों का मुख्य प्रयोजन केन्द्रों की गतिविधियों की पुनरीक्षा करना और इन सम्मेलनों में भाग लेने वालों को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करना था। इस वर्ष के सम्मेलनों का एक सार्थक रूप राज्य शिक्षा विभाग के कार्मिकों का इन सम्मेलनों में से कुछ में गहनतर रुचि लेना था।

विचार-गोष्ठी पठन

विचार-गोष्ठी पठन के पुरस्कार-विजेताओं का वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन गोहाटी में नवंबर 1968 में हुआ था जिसमें देश भर से आए 144 व्यक्तियों में से चुने हुए 25 शिक्षकों ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। चुने हुए निबंधों को 'दि टीचर स्पीक्स' शीर्षक शृंखला के पांचवें अंक के रूप में संकलित कर प्रकाशित किया गया था।

स्कूल पुस्तकालयों के वृत्तिमूलक उपयोग में सुधार

स्कूल-पुस्तकालयों के प्रभावी उपयोग के द्वारा शिष्यों और छात्रों के उचित पठन-स्वभाव को विकसित करने की दृष्टि से 1967-68 की अवधि में प्रारंभ किये गए कार्यक्रम का 1968-69 के प्रारंभ में पूर्णतः मूल्यांकन किया गया था। इस मूल्यांकन की सफलता के पश्चात, परियोजना का दूसरा चरण प्रारंभ किया गया था।

परीक्षित सद्-व्यवहार का संग्रह और प्रसारण

परिषद् विस्तार-सेवा विभागों और क्षेत्र-एककों की सहायता से स्कूलों में परीक्षित सद्-व्यवहार का संग्रह और संकलन करने तथा उनका अपने 'स्कूल-व्यवहार में नई प्रवृत्तियां' बुलेटिन के माध्यम से प्रसारित करने के कार्य को जारी रख सकी। 1968-69 में इस बुलेटिन के छः अंक प्रकाशित हुए थे।

विज्ञान प्रतिभा खोज

परिषद् ने आधुनिक विश्व में विज्ञान और गणित में प्रतिभा का अत्यधिक महत्त्व, उपयुक्त आयु पर इसकी पहचान और इसको शिक्षा देकर योग्य बनाने का महत्त्व अनुभव कर सन् 1964 में राष्ट्रीय परियोजना के रूप में, विज्ञान प्रतिभा खोज की इस योजना को प्रारंभ किया था। इस योजना के अंतर्गत विशुद्ध विज्ञानों में पीएच०डी० तक के अध्ययन हेतु छात्र-वृत्ति देने, शुल्कों की प्रतिपूर्ति और पाठ्यपुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि के क्रय के लिए अनुदान प्रदान करने के प्रयोजन से विभिन्न बृहद् परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष 350 छात्रों का चयन किया जाता है। अनुवर्ती कार्यक्रम के रूप में, विद्वानों का संपर्क उन्हीं के लिए आयोजित ग्रीष्मकालीन संस्थानों में ख्याति-प्राप्त वैज्ञानिकों से भी कराया जाता है। साथ ही, स्नातकोत्तर विद्वानों को चुनी हुई अनुसंधान प्रयोगशालाओं में पृथक्-पृथक वैज्ञानिकों के साथ लगा दिया जाता है जिससे उनमें अनुसंधान की भावना उत्पन्न हो सके।

इस वर्ष इस योजना का महत्त्वपूर्ण कार्य सभी क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षाएं आयोजित करना था। इस उद्देश्य के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में 14 संबद्ध केन्द्र स्थापित किए गए थे जहां प्रश्नपत्रों का अनुवाद करने, उनका मुद्रण और वितरण करने का कार्य किया गया था। इस वर्ष स्नातक-स्तर से नीचे के 655 और स्नातकोत्तर-स्तर के 164 विद्यार्थियों ने छात्रवृत्तियां, पुस्तक-अनुदानादि प्राप्त किए। इसी वर्ष गणितीय प्रतिभा खोज का एक कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया था और छात्रवृत्तियां-प्रदान करने के लिए 5 विद्यार्थी चुने गए थे।

सितंबर 1968 में अमेरिका और ब्रिटेन से विज्ञान में प्रतिभाशील विद्वानों का एक दल भारत आया था। इस अवसर पर विचार-विनिमय

की दृष्टि से दिल्ली के विज्ञान-प्रतिभा खोज के पुरस्कृत व्यक्तियों की एक बैठक आयोजित की गई थी।

अनुसंधान-परिणामों को क्षेत्र तक प्रसारित करना

अभिप्रेरणा विकसित करने के लिए स्कूल और प्रशिक्षण महाविद्यालयों के स्तर पर प्रयोगात्मक परियोजनाएं प्रारंभ की गई थीं। आठ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था जिनमें 122 शिक्षक/अध्यापक शिक्षक/मुख्याध्यापक/विस्तार समन्वयकर्त्ता सम्मिलित हुए थे।

परिषद् द्वारा विकसित विज्ञान-सामग्री को ग्रहण करने और अनुकूलन करने के लिए राज्यों के साथ सहयोग

पाठ्यपुस्तकों और पूरक सामग्री के पश्चात राज्यों को परिषद् द्वारा विकसित विज्ञान-सामग्री से परिचित कराने के लिए पग उठाए गए थे। केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने विज्ञान-सामग्री को जुलाई, 1967 से कक्षा 6 में लागू किया, सन् 1968 में इसे कक्षा 7 में भी लागू कर दिया और सन् 1969 में इसे कक्षा 8 में भी लागू करने का प्रस्ताव किया है। दिल्ली प्रशासन ने पाठ्यक्रम का विज्ञान-भाग जुलाई 1968 से सभी स्कूलों की कक्षा 6 के लिए स्वीकार कर लिया है और अनुवर्ती वर्षों में इसको क्रमिक रूप में कक्षा 7 व कक्षा 8 में लागू कर देगा। आंध्र प्रदेश में परिषद् के पाठ्यक्रमों का अनुसरण करते हुए, राजकीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने परिषद् के विज्ञान-विभाग के सहयोग से उस राज्य के मिडिल स्कूलों के लिये द्वि-वर्षीय एक नए विज्ञान कार्यक्रम को विकसित किया है। गुजरात में, प्रथम वर्ष के लिये परिषद् की विज्ञान-सामग्री का सरदार पटेल विश्वविद्यालय में गुजराती भाषा में अनुवाद किया गया था और अब कैरा जिले के 12 स्कूलों में उसका प्रयोग किया गया है। केरल राज्य ने अपने विज्ञान पाठ्य-विवरण को परिषद् के पाठ्य-विवरण के अनुरूप पहले ही संशोधित कर लिया है, और मलयालम भाषा में पाठ्य-सामग्री विकसित कर ली है। मैसूर राज्य शिक्षा विभाग ने अपने प्रथम चरण के रूप में, पृथक-पृथक विषय-अनुशासन की दृष्टि से विज्ञान पाठ्य विवरणों में सुधार करने के लिए एक अंतरिम कार्यक्रम विकसित किया है। असम, मणिपुर और राजस्थान के शिक्षा विभाग अपने पाठ्य विवरणों को सुधारने और स्तर ऊंचा करने के लिए तथा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों के अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के रूपाभ्यनुकूलन लिखने को तैयार हैं।

मानविकी में पाठ्यक्रम-सुधार-कार्यक्रम का क्षेत्र तक प्रसारण

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग ने विभाग द्वारा तैयार की गई सामग्री का उपयोग करने और पाठ्यक्रम-सुधार-कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए साधन-कार्मिकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से अनेक राज्यों के साथ सहयोग किया। इस सहयोग के संक्षिप्त विवरण नीचे दिए जाते हैं :

(अ) बिहार

(1) कक्षा 1 से 5 के लिए पटन-परियोजना-सामग्री के उपयोग हेतु साधन-कार्मिकों को प्रशिक्षण देने का एक कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रांगण में आयोजित किया गया था।

(2) बिहार के प्राथमिक स्कूलों के लिए गणित की निर्देश-पुस्तिका विकसित करने हेतु पटना में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

(आ) दिल्ली

(1) परिषद् द्वारा कक्षा 3–5 के लिए हिन्दी में तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों और निर्देश-पुस्तिकाओं के उपयोग हेतु एक प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए साधन-कर्मचारीवर्ग को आमंत्रित किया गया था।

(2) शिक्षा निदेशालय, दिल्ली की अनुकूलन समिति की तीन बैठकें कक्षा 6 के लिए नागरिक-शास्त्र, भूगोल और इतिहास में परिषद् की पाठ्यपुस्तकों पर विचार-विनिमय के लिए हुई थीं।

(इ) मध्य प्रदेश

परिषद् ने राज्य में स्कूल स्तर के विभिन्न धरातलों पर स्कूल शिक्षा और पाठ्यक्रम के ढांचे में परिवर्तन लाने की कार्यावधि के हेतु मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की पाठ्यक्रम-समिति को प्रवीणता प्रदान की।

(ई) महाराष्ट्र

महाराष्ट्र पाठ्यपुस्तक उत्पादन और पाठ्यक्रम अनुसंधान के ब्यूरो ने पाठ्यक्रम अनुसंधान और पाठ्य-विवरण व पाठ्यपुस्तकों की तैयारी में अभिस्थापन के लिए विभाग के पास एक मास की अवधि के लिए अपने अनुसंधान अधिकारी को भेजा था।

(उ) मैसूर

परिषद् ने मातृभाषा हिन्दी में पठन-परियोजना द्वारा तैयार पुस्तकों के नमूने पर कन्नड़ रीडर के संशोधन में सहायता दी।

(ऊ) राजस्थान

(1) कक्षा 1 से 8 के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को राजस्थान पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीयकरण समिति द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में तकनीकी सहायता दी गई थी।

(2) राजस्थान-राज्य के लिए हिन्दी में प्राइमर, पुस्तक-1 और पुस्तक-2 लिखने के उद्देश्य से तकनीकी सहायता दी गई थी।

(3) विस्तार-सेवा विभाग, अजमेर को 'पाठ्यक्रम की दल-परिनिरीक्षण समृद्धि' के हेतु कार्यशाला में तकनीकी सहायता दी गई थी।

(ए) उत्तर प्रदेश

सरकारी रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लखनऊ द्वारा 'राष्ट्रीय एकता और सामाजिक-विज्ञान प्रशिक्षण' विषय पर आयोजित विचार-गोष्ठी में राष्ट्रीय पर एक विशेष बल देते हुए सामाजिक-विज्ञानों में प्रशिक्षण एककों की तैयारी में सहायता प्रदान की गई थी।

(ऐ) केन्द्रीय विद्यालय संगठन

परिषद् ने भोपाल में हुए ग्रीष्मकालीन संस्थान में परिषद्-पठन सामग्रियों के उपयोग के लिए केन्द्रीय विद्यालयों के हिन्दी शिक्षकों के संगठन में सहायता दी।

अन्य कार्यक्रम

(1) परिषद् जन-संख्या शिक्षा को स्कूल के पाठ्य-क्रम में समाविष्ट करने के उपाय ढूंढ़ निकालने में 'परिवार नियोजन संस्थान' के साथ सहयोग कर रही है।

(2) परिषद् के अधिकारियों ने शैक्षिक-दूरवीक्षण-परियोजनाओं के अधीन 'परमाणु ऊर्जा आयोग' द्वारा स्थापित कार्यकारी दलों में भाग लिया।

परीक्षा सुधार कार्यक्रम

पाठ्यक्रम सुधार के इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में परिषद् के मूल अधिगम और कार्यक्रम का उल्लेख पाठ्यक्रम-विकास के अध्याय में किया गया है। प्रतिवेदन-वर्ष में, और अधिक राजकीय शिक्षा संस्थानों और राजकीय मूल्यांकन एककों ने स्कूल-स्तर पर मूल्यांकन में सुधार का कार्य आरंभ किया और इस कार्य में 'परिषद्' ने सहायता की थी। परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और राज्य मूल्यांकन एकक के कुछ मुख्य कार्मिकों को गहन-प्रशिक्षण भी दिया था। इन राज्यों और अभिकरणों में आंध्रप्रदेश, असम, नागालैंड और नेफा, दिल्ली-प्रशासन, गुजरात, हरयाणा, मद्रास, मैसूर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और दिल्ली का केन्द्रीय वासुसेना स्कूल सम्मिलित हैं। इस वर्ष विश्वविद्यालीय शिक्षा में परीक्षा-सुधार-कार्यक्रम का एक प्रयोग भी किया गया था जिसमें दिल्ली, मेरठ और गुजरात के विश्वविद्यालयों में सहयोग-विस्तार सम्मिलित था।

शिक्षण शिक्षा में सुधार

गहन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम केरल में जुलाई 1967 में आरंभ किया गया था। इस वर्ष केरल के प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों का सम्मेलन नए पाठ्यविवरण और छात्र-शिक्षण तथा मूल्यांकन के कार्यक्रम में द्वितीय वर्ष के अनुभवों का अनुमान लगाने के लिए आयोजित किया गया था।

प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़-शिक्षा के क्षेत्र में 'कृषक शिक्षा और वृत्ति-मूलक साक्षरता' की परियोजना के अंतर्गत 'किसान साक्षरता योजना' का दूसरा कार्यकारी दल शिक्षा मंत्रालय और परिषद् के प्रौढ़ शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप में आयोजित किया गया था। कार्यकारी दल में सामाजिक-शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न राज्य सरकारों और स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इन राज्यों में इस योजना को कार्यान्वित करने की रूपरेखा तैयार की गई थी।

बंबई-स्थित श्रमिक विद्यापीठ अधिक प्रभावी रूप में कार्य और औद्योगिक प्रबंध तथा श्रम-संगठनों की सहायता से नगर के औद्योगिक तथा अन्य कर्मचारियों को एकीकृत शिक्षा देने में प्रगति करता रहा। बंबई श्रमिक विद्यापीठ के कार्य का मूल्यांकन, आजकल, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संगठन की ओर से बंबई के टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

परिषद् ने, पूर्व पैराग्राफों में उल्लिखित कार्य-क्रमों के अतिरिक्त भी अपनी रुचि के क्षेत्रों में कार्य कर राजकीय शिक्षा विभागों तथा अन्य अभिकरणों की सहायता-हेतु अनेक अवसरों पर अपने अधिकारियों को परामर्शदाता/साधक व्यक्तियों के रूप में कार्य करने को भेजा। परिषद् विचारों/अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/बैठकों में भी भाग लेती रही है। यह शैक्षिक प्रदर्शनियों में भी सम्मिलित हुई है। उनके कार्यकलापों में से कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों के विवरण अगले अध्याय में प्रस्तुत किए गए हैं।

7. राष्ट्रीय एकीकरण एवं सह-पाठ्यक्रम संबंधी कार्यक्रम

राष्ट्रीय एकीकरण की परियोजना

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रीय एकीकरण, लोकतांत्रिक नागरिकता आदि समस्याओं का महत्त्व अत्याधिक हो गया है। राष्ट्रीय एकीकरण को विविध कार्यकलापों के माध्यम से समर्थ करना प्रस्तावित है, जिनमें स्कूल-स्तर पर युवा-शिक्षा महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। भारत-सरकार के शिक्षा-मंत्रालय ने, इस वर्ष, विद्यार्थियों में राष्ट्रीय ऐक्य अथवा संगठन की भावना सृजन करने वाले कार्यक्रमों को सक्रियता प्रदान करने का निश्चय किया है। राष्ट्रीय परिषद् ने, जिसे इस क्षेत्र में स्कूल-कार्यक्रमों को विकसित करने का कार्य सौंपा गया है, राष्ट्रीय एकीकरण पर एक परियोजना प्रारंभ कर रखी है। इस पर कार्य करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के कर्मचारी-वर्ग में से एक समिति नियुक्त कर दी गई है।

इस परियोजना के प्रमुख उद्देश्यों में से एक मार्ग-दर्शक-रेखाएं विकसित करना और स्कूलों द्वारा प्रयोज्य पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम के कार्यक्रमों और गतिविधियों के प्रकारों को दर्शाना है। इस प्रयोजन के लिए कक्षा-अध्यापकों से परामर्श करना आवश्यक समझा गया ताकि हम लोग पूर्णरूप से मनन और विचार-विनिमय के उपरांत कार्यक्रमों और गति-विधियों को वास्तविक और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत कर सकें। अतः, शिक्षकों के चार क्षेत्रीय सम्मेलनों का गठन किया गया था। इन सम्मेलनों में, शिक्षकों ने कुछ मूल्यवान सामग्री को विकसित किया है जिसमें राष्ट्रीय एकीकरण को संवर्धित करने की दृष्टि से स्कूलों द्वारा प्रारंभ किए जा सकने वाले पाठ्यक्रम संबंधी कार्यक्रमों और सह-पाठ्यक्रम गति-विधियों का दिग्दर्शन कराया गया है। इन सम्मेलनों में विकसित सामग्री तथा समिति के सदस्यों के चिंतन पर आधारित एक निर्देश-पुस्तिका विकसित की गई है। इस पुस्तक के प्रकाशन की योजनाएँ बना ली गई हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का प्रयोगात्मक स्कूल

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान ने बाल विकास से संबंधित शैक्षिक विचारों को वास्तविक कक्षा-स्थिति में परीक्षण करने की दृष्टि से एक प्रयोगात्मक शिशु स्कूल को पिछले कुछ वर्षों से चला रखा है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान ने, प्रतिवेदन वर्ष में, परिषद्-मुख्यालय के साथ लगे दिल्ली के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रांगण में ही एक शिशु एवं प्राथमिक स्कूल चलाने में उस संस्थान के साथ सहयोग किया था जिसमें परिषद् द्वारा आंशिक वित्त-सहायता तथा तकनीकी-मार्गदर्शन प्रदान किया गया था। यह शिशु एवं प्राथमिक स्कूल मुख्य रूप में प्रांगण-परिधि में रहने वाले तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही करता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान ने अपने द्वारा विकसित पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री का प्राथमिक परीक्षण करने और नवीन शैक्षिक विचारों एवं अभ्यासों का प्रयोग करने के लिए इस अवसर का उपयोग किया।

'आज की भारतीय शिक्षा' विषय पर प्रदर्शनी

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग कलकत्ता में 'एबीसी एक्सपो प्रदर्शनी' में भाग ले रहा है। इस विभाग की 'आज की भारतीय शिक्षा' विषय पर छाया-चित्रों की प्रदर्शनी में शैक्षिक विकास के विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित किया गया है।

बाल-हितार्थ निश्शुल्क शैक्षिक चलचित्रप्रदर्शन

इस वर्ष, श्रव्य-दृश्य शिक्षा-विभाग के सभा भवन में रविवार तथा अवकाश के दिनों में लगभग 45 चलचित्र-प्रदर्शनों का आयोजन किया गया था। ये चलचित्र-प्रदर्शन स्थानीय स्कूलों के छात्रों में अत्यधिक लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं।

उच्चस्तर के सम्मेलनों में भाग लेना

संयुक्त निदेशक डाक्टर शिव कुमार मित्र ने, जनवरी 1969 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था के छप्पनवें बंबई-अधिवेशन में मनोविज्ञान एवं शैक्षिक विज्ञान अनुभाग के तत्वावधान में 'छात्र असंतोष' विषय पर हुई गोष्ठी में 'परिवर्तन के लिए समायोजन हेतु छात्र असंतोष', शीर्षक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। उनको 1970 वर्ष के लिए भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था के मनोविज्ञान एवं शैक्षिक विज्ञान अनुभाग का अध्यक्ष भी निर्वाचित किया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय संपर्क

राष्ट्रीय परिषद् ने अमरीकी सरकार के अंतर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति-संगठन तथा अन्य अभिकरणों से विशेषज्ञ जानकारी, उपकरण एवं प्रशिक्षण सुविधाओं के रूप में सहायता प्राप्त की है। राष्ट्रीय परिषद् ने विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेकर और परस्पर मुलाकातों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से संपर्क बनाए रखा। इनका संक्षिप्त-विवरण नीचे दिया जा रहा है :

विदेशों के शिष्टमंडल

(1) डाक्टर शिव कुमार मित्र, संयुक्त निदेशक, जून 17-23, 1968 तक टोक्यो (जापान) में हुई एशिया में शैक्षिक अनुसंधान के विशेषज्ञों की बैठक में गए थे, और अगस्त 23-30, 1968 की अवधि में 'कनाडा में शैक्षिक अनुसंधान' पर संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संगठन की बैठक में भी उपस्थित थे।

(2) पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग के डीन और अध्यक्ष डाक्टर रवीन्द्र ह० दवे श्री रमेश चन्द्र सक्सेना, प्रवाचक के साथ संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति-संगठन कार्यक्रम के अंतर्गत जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान में 3 फरवरी से 1 मार्च, 1969 तक 'एशिया द्वारा टोक्यो में स्कूल-पाठ्यक्रम से संबंधित समस्याओं,' पर आयोजित द्वितीय शैक्षिक अनुसंधान कार्यशाला में उपस्थित थे। डाक्टर दवे संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान संगठन-कार्यक्रम के ही अंतर्गत टोक्यो में 5 मार्च से 11 मार्च, 1969 और संस्कृति संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान और संस्कृति तक हुई 'एशिया में शैक्षिक लक्ष्य और उद्देश्य,' के संबंध में विशेषज्ञों की बैठक में गए थे, जहां उन्होंने बैठक के सचिवालय सलाहकार के रूप में कार्य किया। डाक्टर दवे ने शिक्षा एवं व्यवसाय संबंधी निर्देशन हेतु एशिया-क्षेत्रीय संस्था के संविधान को अंतिम रूप देने के लिए नियुक्त कार्यकारी-दलों की बैठक में एक कार्यकारी-दल के उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

(3) प्रौढ़-शिक्षा विभागाध्यक्ष डाक्टर ते० ए० कोशी ने संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान और संस्कृति संगठन तथा निरक्षरता-उन्मूलन के लिए इतालवी संघ के निमंत्रण पर विश्व 'प्रयोगात्मक साक्षरता कार्यक्रम' के अंतर्गत 'वृत्तिमूलक साक्षरता परियोजनाओं के हेतु 'विधि एवं सामग्री' पर एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भाग लिया और उसी विषय पर भारतीय परियोजनाओं में प्रयुक्त 'विधि एवं सामग्री' पर एक पत्र प्रस्तुत किया।

(4) विज्ञान विभागाध्यक्ष डाक्टर मोहन चंद्र पंत ने पेरिस में मार्च 69 में एकीकृत विज्ञान शिक्षण में संस्थापन कार्यक्रमों की संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संगठन की योजना-सभा में भाग लिया। डाक्टर पंत संयुक्त राष्ट्र शिक्षा-विज्ञान और संस्कृति संगठन बाल आपाती निधि की एशिया में और रसायन-विज्ञान शिक्षण में मूल्यांकन की परियोजनाओं पर बैंकॉक और कैंडी, श्रीलंका में सं० रा० शि० सं० रा० शि० वि० और सं० सं० की दो क्षेत्रीय कार्यशालाओं में भी उपस्थित रहे। अनुवर्ती

सभा सं० ए० शि० वि० और सं० सं० के सहयोग से शुद्ध और प्रयुक्त रसायन की अंतर्राष्ट्रीय एकक द्वारा आयोजित की गई थी।

(5) डाक्टर राम गोपाल मिश्र, प्रवाचक बैंकॉक में सितंबर 9-16, 1968 में 'पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन में अनुसंधान' पर हुई क्षेत्रीय कार्य-शाला में उपस्थित थे, और उन्होंने 'पाठ्यक्रम में अनुसंधान,' तथा 'पाठ्यक्रमागत मूल्यांकन का ढांचा' पर दो पत्र प्रस्तुत किए।

भ्रमण

(1) मेक्वायर विश्वविद्यालय आस्ट्रेलिया के निदेशक डाक्टर जी० आर० मेयेर ने केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली का भ्रमण किया और वहां के 'पूर्व-छात्र-संघ' में 'आस्ट्रेलिया शिक्षा में प्रचलित प्रवृत्तियों' और 'अनुसंधान अध्ययन मंडल' में 'यूनाइटेड किंगडम में माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-पाठ्यक्रम के प्रति रुचि और अभिरुचि' शीर्षक वार्ताएं प्रस्तुत कीं।

(2) सोफिया, बलगेरिया की 'विदेशों के साथ मैत्री और सांस्कृतिक संबंधों' की समिति के निदेशक श्री लागोई पोपिग्रोर्दनोव ने अध्यापक-शिक्षा-विभाग, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का भ्रमण किया।

(3) ओहिओ राज्य विश्वविद्यालय, सं० रा० अ० के डीन डाक्टर डी० अलेक्जेन्डर सेवेरिनो ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का भ्रमण किया और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के कार्यक्रमों के लिए परिषद् को अमरीकी अंतर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण के माध्यम के रूप पर विचार-विमर्ष किया था।

(4) जापान और जर्मन लोकतांत्रिक गणतंत्र से शिक्षाशास्त्रियों के दलों ने क्रमशः 'भारत में अध्यापक-शिक्षा' और 'दिल्ली में कृषि-दूरवीक्षण कार्यक्रम' के संबंध में बातचीत करने के लिए, 'अध्यापक शिक्षा विभाग' और 'प्रौढ़ शिक्षा विभाग का भ्रमण किया।

अध्ययन-हेतु विदेश-गमन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निम्न नामांकित अधिकारीगण उनके नामों के सम्मुख लिखे विषयों में प्रशिक्षण हेतु, विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत, विदेशों को गए :

(1) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में क्रमशः शिक्षा और गणित के प्राध्यापक, सर्वश्री जे० के० सूद और वी० सी० नायर अमरीकी अंतर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ प्रशिक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका गए।

(2) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में शिक्षा, प्राणि-विज्ञान और अंग्रेजी के प्राध्यापक सर्वश्री ए० पी० पचौरी, बी० एन० लाल, एस० के० ऐथल फुलब्राइट छात्रवृत्तियों पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका गए।

(3) डाक्टर (श्रीमती) बी० राजू, प्रवाचक, शैक्षिक विकास, योजना और प्रशासन में संयुक्त राष्ट्र शिक्षा विज्ञान और संयुक्त संगठन की प्राध्यापिका के रूप में केन्या गईं।

(4) श्रीमती ऐल० राजपाल अतिथि प्राध्यापक के रूप में सं० राष्ट्र अमरीका गईं।

(5) डाक्टर (कुमारी) खुर्शीद बोस शिक्षक प्रशिक्षण बर्सरी के लिए ऐक्जीटर विश्वविद्यालय गईं।

(6) श्री बी० बी० अग्रवाल, प्राध्यापक, फेलोशिप पर लंदन स्थित शिक्षा संस्थान गए।

प्रदर्शनी

भारत-सोवियत सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंश-रूप 'ताजिकिस्तान में शिक्षा' पर एक प्रदर्शनी भारत-भ्रमणार्थ आई और उसने दिल्ली व बंबई में अपने प्रदर्शनों का आयोजन किया। दिल्ली में प्रदर्शनी का उद्घाटन शिक्षा मंत्री डाक्टर त्रिगुण सेन ने किया था।

8. राष्ट्रीय परिषद् कैम्पस और कर्मचारी वर्ग का कल्याण

अपने 'भवन-निर्माण' की दिशा में

पूर्वनिर्मित तथा भरे हुए तीन-मंजिले विज्ञान खंड, चार-मंजिले अधिकारी-छात्रावास, गोष्ठी कक्ष एवं क्लब खंड और दो भंडार-गोदामों के अतिरिक्त, 1968-69 वर्ष में निम्नलिखित निर्माण-कार्य प्रारंभ किए गए थे :

(1) छः मंजिला विभागीय खंड,

(2) अधिकारी-छात्रावास पर दो अतिरिक्त मंजिले,

(3) केन्द्रीय विज्ञान कार्यशाला के लिए एक ढलाईघर,

(4) कर्मचारियों के लिए दो-कमरों वाले सोलह छोटे निवास-स्थल ।

(5) तीन नलिकाकार संरचनाएं (इनसे आजकल परिषद् का सचिवालय स्थित है)

छः मंजिला-विभागीय खंड के अतिरिक्त उपरोक्त सभी भवन पूरी तरह बन चुके हैं। छः मंजिला भवन भी पूरा होने वाला है।

एक पुस्तकालय खंड, एक अल्पाहारगृह तथा कुछ अन्य लघु निर्माण-कार्य 1969-70 वर्ष में प्रारंभ किए जाने की संभावना है।

कर्मचारी वर्ग के कल्याणार्थ कार्य

परिषद् ने कर्मचारीवर्ग के कल्याण के लिए, विगत वर्ष, निम्नलिखित पग उठाए हैं :

(1) स्थायी कर्मचारीवर्ग को ग्राह्य अन्य लाभों तथा सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से, प्राथमिकता के आधार पर, शैक्षणिक तथा प्रशासनिक दोनों ही प्रकार के कर्मचारियों की पुष्टि के लिए कार्य प्रारंभ किया गया था।

(2) कर्मचारियों के लिए अंशदायी भविष्यनिधि, निवृत्ति-वेतन और आनुतोषिक सहित सेवा-निवृत्ति-हितों की एक योजना को अंतिम रूप दिया गया था और उसे प्रयोज्य किया गया था।

(3) कर्मचारीवर्ग की सेवानिवृत्ति और सेवा-शर्तों को शासित करने वाले नियमों एवं विनियमों को, शासी निकाय के अनुमोदन-सहित, अंतिम रूप दे नेके प्रयत्न भी किए जा रहे हैं।

(4) परिषद् के अंशदान से आवासीय-भवन अधि-ग्रहण कर कर्मचारियों को अच्छे आवासीय-स्थान प्रदान करने की योजना के अंतर्गत परिषद् अभी तक 72 कर्मचारियों के लिए आवास का प्रबंध कर चुकी है।

(5) कैम्पस में एक सहकारी कैन्टीन कर्मचारीवर्ग द्वारा चलाई जा रही है जिसकी निर्वाचित कार्यकारिणी कैन्टीन से संबंधित सभी मामलों की देखभाल करती है। यह कार्यकारिणी इसे पंजीकृत कराने का प्रबंध कर रही है।

(6) कर्मचारी वर्ग को विभिन्न अंतरंग और बहिरंग खेलकूदों में भाग लेने की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। विभिन्न विभागों और अनुभागों के कर्मचारियों को परस्पर भेंट का अवसर प्रदान करने के लिए समारोह-प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

(7) उत्सवों और परिषद् के स्थापना-दिवस जैसे विशेष अवसरों पर विविध मनोरंजन-कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

परिशिष्ट - क

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्यगण

1. शिक्षा मंत्री,
   भारत सरकार,
   नई दिल्ली ।
   (अध्यक्ष)
2. शिक्षा सलाहकार,
   भारत सरकार,
   शिक्षा मंत्रालय,
   नई दिल्ली ।
   (उपाध्यक्ष)
3. शिक्षा मंत्री,
   आंध्र प्रदेश,
   हैदराबाद ।
4. शिक्षा मंत्री,
   असम,
   शिलाङ ।
5. शिक्षा मंत्री,
   गुजरात,
   अहमदाबाद ।
6. शिक्षा मंत्री,
   हरयाणा,
   चंडीगढ़ ।
7. शिक्षा मंत्री,
   बिहार,
   पटना ।
8. शिक्षा मंत्री,
   जम्मू-कश्मीर,
   श्रीनगर ।
9. शिक्षा मंत्री,
   महाराष्ट्र,
   बंबई ।
10. शिक्षा मंत्री,
    केरल,
    त्रिवेन्द्रम ।
11. शिक्षा मंत्री,
    मध्य प्रदेश,
    भोपाल ।
12. शिक्षा मंत्री,
    मैसूर,
    बंगलोर ।
13. शिक्षा मंत्री,
    उड़ीसा,
    भुवनेश्वर ।
14. शिक्षा मंत्री,
    पंजाब,
    चंडीगढ़ ।
15. शिक्षा मंत्री,
    राजस्थान,
    जयपुर ।
16. शिक्षा मंत्री,
    उत्तर प्रदेश,
    लखनऊ ।
17. शिक्षा मंत्री,
    तमिल नाडू
    मद्रास ।
18. शिक्षा मंत्री,
    पश्चिमी बंगाल,
    कलकत्ता ।
19. शिक्षा मंत्री,
    नागालैण्ड,
    कोहिमा ।

20. मुख्य आयुक्त,
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह,
पोर्ट ब्लेयर ।

21. प्रशासक,
दादर और नगर हवेली,
सिलवासा ।

22. लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
गोआ, दमन और दीव,
पंजिम ।

23. लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
दिल्ली प्रशासन,
दिल्ली ।

24. लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
हिमाचल प्रदेश,
शिमला ।

25. प्रशासक,
संघीय राज्य,
लक्कादीव,
कवरत्ती ।

26. मुख्य आयुक्त,
मणिपुर,
इंफाल ।

27. सलाहकार,
असम गवर्नर,
एन० ई० एफ० ए०,
शिलाङ ।

28. लेफ्टिनेण्ट गवर्नर,
पांडिचेरी सरकार,
पांडिचेरी ।

29. मुख्य आयुक्त,
त्रिपुरा सरकार,
अगरतला ।

30. मुख्य आयुक्त
चंडीगढ़ प्रशासन,
चंडीगढ़ ।

31. डॉ० बी० एन० गांगुली,
उप-कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

32. डॉ० दौलतसिंह कोठारी,
अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

33. डॉ० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

34. डॉ० शिव के० मित्र,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

35. प्रो० एम० बी० माथुर,
निदेशक,
एशियाई शैक्षिक आयोजन एवं
प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली ।

36. प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल, हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

37. प्रो० आर० के० दास गुप्त,
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

38. श्री० के० जी० सैय्यदैन,
पंडारा रोड फ्लैट्स, (डी० 2/9)
नई दिल्ली ।

39. डॉ० पी० के० केलकर,
निदेशक,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
कानपुर ।

40. प्रो० पी० एन० धर,
निदेशक,
आर्थिक विकास संस्थान,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

41. डॉ० एस० मिश्रा,
उप-कुलपति,
उत्कल विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर ।

42. डॉ० कुरुविला जेकब,
प्रिंसिपल,
हैदराबाद पब्लिक स्कूल,
बेगमपेठ,
हैदराबाद ।

43. डॉ० एम० एस० गोरे,
निदेशक,
टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान,
बंबई ।

44. प्रो० ए० आर० कामत,
सांख्यिकी प्रोफेसर,
गोखले राजनीति एवं अर्थशास्त्र संस्थान,
पूना ।

45. श्री एन० डी० सुंदरवडिवेलु,
शिक्षा विभाग,
तमिल नाडु ।

46. डॉ० वी० सी० वामन राव,
उप-कुलपति,
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
तिरुपति ।

47. श्री एल० आर० सेठी,
अध्यक्ष,
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
नई दिल्ली ।

48. प्रो० हीरेन मुकर्जी,
संसद सदस्य,
नई दिल्ली ।

49. डॉ० ए० सी० जोशी,
उप-कुलपति,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

50. प्रो० ए० मुजीब,
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

51. श्री प्र०न० नातू,
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(सदस्य सचिव)

परिशिष्ट-ख

शासी निकाय के सदस्यगण

1. शिक्षा मंत्री,
भारत सरकार,
नई दिल्ली ।

(अध्यक्ष)

2. शिक्षा सलाहकार,
भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

(उपाध्यक्ष)

3. डॉ० दौलतसिंह कोठारी,
अध्यक्ष,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

4. डॉ० बी० एन० गांगुली,
उप-कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

5. डॉ० (कुमारी) कौमुदी,
उप वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

6. डॉ० शिव के० मित्र,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

7. श्री के० जी० सैय्यदैन,
पंडारा रोड फ्लैट्स (डी० 2/9)
नई दिल्ली ।

8. प्रो एम० वी० माथुर,
निदेशक,
एशियाई शैक्षिक आयोजन एवं
प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली ।

9. प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

10. प्रो० आर० के० दास गुप्त,
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

11. रिक्त स्थान

12. रिक्त स्थान

13. श्री प्र० न० नातू,
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(सदस्य सचिव)

परिशिष्ट - ग

वित्त समिति के सदस्यगण

1. निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(अध्यक्ष)

2. डॉ० शिव के० मित्र,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

3. डॉ० (कुमारी) कौमुदी,
उप-वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

4. प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

5. प्रो० आर० के० दास गुप्त,
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

6. श्री प्र० न० नातू,
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।
(सदस्य सचिव)

परिशिष्ट - घ

शैक्षिक अध्ययन मंडल के सदस्यगण

1. निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।
(अध्यक्ष)

2. संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।

3. श्री जे० पी० नाइक,
सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

4. श्री एल० ओ० जोशी,
आयुक्त,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
नई दिल्ली ।

5. श्रीमती आई० एल० सिन्हा,
प्रिंसिपल,
दौलतराम कालेज,
दिल्ली ।

6. प्रो० आर० के० दास गुप्त,
अध्यक्ष,
आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

7. प्रो० शांति नारायण,
प्रिंसिपल,
हंसराज कालेज,
दिल्ली ।

8. श्री के० जी० सैय्यदैन,
पंडारा रोड फ्लैट्स (डी० 2/9)
नई दिल्ली ।

9. अध्यक्ष,
मनोवैज्ञानिक आधार विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

10. अध्यक्ष,
प्रौढ़ शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

11. अध्यक्ष,
विज्ञान शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

12. अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

13. अध्यक्ष,
श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

14. अध्यक्ष,
क्षेत्र सेवा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

15. अध्यक्ष,
केन्द्रीय विज्ञान कार्यशाला,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

16. अध्यक्ष,
शैक्षिक प्रशासन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

17. अध्यक्ष,
शिक्षा आधार विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

18. अध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

19. प्रिंसिपल,
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
दिल्ली ।

20. श्री प्र० न० नातू,
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(सदस्य सचिव)

स्थायी अनुसंधान समिति

1. डॉ० शिव के० मित्र
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(अध्यक्ष)

2. श्री० जे० पी० नाइक,
सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

3. डॉ० एन० पी० पिल्ले,
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
केरल विश्वविद्यालय
त्रिवेन्द्रम ।

4. डॉ० ए० आर० कामत,
सांख्यिकी प्रोफेसर,
गोखले राजनीति एवं अर्थशास्त्र संस्थान,
पूना ।

5. प्रो० आर० वी० माथुर,
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ ।

6- डॉ० एम० एस० गोरे,
निदेशक
टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान,
बंबई ।

7. डॉ० ए० मुजीब,
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

8. प्रो० एस० एम० मोहसिन,
प्रोफेसर और अध्यक्ष,
मनोविज्ञान विभाग,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

9. डॉ० पी० एन० धर,
निदेशक,
अर्थशास्त्र विकास संस्थान,
दिल्ली ।

10. प्रो० एस० बी० अदावल,
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद ।

11. डॉ० रवीन्द्र० ह० दवे,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

12. प्रो० पी० के० रॉय,
प्रिंसिपल,
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,
दिल्ली ।

13. डा० ते० ए० कोशी,
अध्यक्ष,
प्रौढ़ शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

14. प्रो० जे० के० शुक्ला,
अध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

15. श्री हरि किशन लाल चुग,
सहायक सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(सदस्य सचिव)

विस्तार एवं क्षेत्र सेवा समिति

1. श्री० ए० सी० देवे गोडा
74, मिलर रोड,
बंगलोर । (अध्यक्ष)

2. श्री ए० आर० दाऊद
सचिव,
अंजुमन-ए-इस्लाम,
92, डा० डी० एन० रोड,
बंबई । (सदस्य)

3. श्री बी० एस० माथुर,
उपनिदेशक,
शिक्षा विभाग,
हरयाणा,
चंडीगढ़ ।

4. डॉ० (श्रीमती) चित्रा नाइक,
निदेशक,
राज्य शिक्षा संस्थान,
महाराष्ट्र,
पूना ।

5. श्री यू० पी० सिन्हा,
निदेशक,
राज्य शिक्षा संस्थान,
बिहार,
पटना ।

6. डॉ० जी० चौरसिया,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
भोपाल ।

7. श्री पी० डी० शर्मा,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,
अजमेर,

8. डॉ० एम० बी० बुच,
अध्यक्ष,
क्षेत्र सेवा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

9. डॉ० रवीन्द्र ह० दवे,
अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

10. प्रो० जे० के० शुक्ला
अध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

11. डॉ० मोहन चंद्र पंत,
अध्यक्ष,
विज्ञान शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

12. श्री हरि किशन लाल चुग,
सहायक सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।
(सदस्य सचिव)

परिशिष्ट - ङ

केन्द्रीय शैक्षिक साहित्य समिति के सदस्यगण

1. डॉ० त्रिगुण सेन,
केन्द्रीय शिक्षा मंत्री,
नई दिल्ली ।
(अध्यक्ष)

2. डॉ० दौलतसिंह कोठारी,
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली ।

3. निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

4. डॉ० बी० एन० गांगुली,
उप-कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

5. डॉ० डी० सी० पवाते,
राज्यपाल,
पंजाब,
चंडीगढ़ ।

6. डॉ० एस० पी० चैटर्जी,
निदेशक,
राष्ट्रीय एटलस संगठन,
1, आचार्य जगदीश बोस रोड,
कलकत्ता ।

7. श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी
बनारस विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

8. डॉ० ताराचंद,
नई दिल्ली ।

9. डॉ० ए० सी० जोशी,
उप-कुलपति,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
बाराणसी ।

10. डॉ० (कुमारी) कौमुदी,
उप-वित्त सलाहकार,
शिक्षा मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

11. डॉ० शिव के० मित्र,
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

12. शिक्षा सचिव,
आंध्र प्रदेश,
हैदराबाद ।

13. श्री के० आर० बैनर्जी,
प्रिंसिपल,
राजकीय शिक्षा संस्थान,
बानीपुर,
चौबीस परगना ।

14. शिक्षा सचिव,
मध्य प्रदेश सरकार,
भोपाल ।

15. श्री एस० एस० बेदी,
सार्वजनिक शिक्षण निदेशक,
चंडीगढ़ ।

16. डॉ० रवीन्द्र ह० दवे,
अध्यक्ष,
पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

17. श्री प्र० न० नातू
सचिव,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली ।

(सदस्य सचिव)

परिशिष्ट - च

बजट अनुमान

(रू० लाखों में)

विभाग/एकक/शीर्ष	1968-69 संशोधित अनुमान			1969-70 बजट अनुमान		
	योजनेतर	योजना	कुल	योजनेतर	योजना	कुल
1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् मुख्यालय	11·40	8·75	20·15	11·60	13·60	25·20
2. प्रकाशन एकक	11·86	16·40	28·26	10·25	16·25	26·50
3. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (विभागों के अतिरिक्त)	35·00	46·41	81·41	28·53	47·50	76·03
4. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान विभाग						
(अ) क्षेत्र सेवाएँ/एकक	2·88	22·91	25·79	4·92	——	4·92
(ब) शैक्षिक सर्वेक्षण एकक	——	1·05	1·05	1·48	0·50	1·98
(स) विज्ञान शिक्षा	21·31	13·17	34·48	31·62	16·18	47·80
(द) पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन	9·76	3·41	13·17	12·67	5·00	17·67
(य) मनोवैज्ञानिक आधार	4·91	1·97	6·88	6·29	2·25	8·54
(र) अध्यापक शिक्षा	2·03	0·56	2·59	2·33	——	2·33
(ल) श्रव्य-दृश्य शिक्षा	8·95	0·59	9·54	9·24	0·25	9·49
(व) प्रौढ़ शिक्षा	3·83	1·67	5·50	3·85	1·75	5·60
(श) शैक्षिक प्रशासन	0·61	0·03	0·64	0·69	0·02	0·71
(ह) शिक्षा के आधार	0·67	0·28	0·95	1·13	——	1·13
5. केन्द्रीय शिक्षा संस्थान	7·61	1·61	9·22	10·68	1·00	11·68
6. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय						
(1) अजमेर	16·19	7·65	23·84	18·50	7·50	26·00
(2) भुवनेश्वर	15·61	23·34	38·95	17·90	8·40	26·30
(3) भोपाल	11·16	10·43	21·59	16·60	8·10	24·70
(4) मैसूर	13·46	17·12	30·58	17·50	10·70	28·20
7. ऋण व अग्रिम	3·00	—	3·00	3·00	—	3·00
	180·24	177·35	357·69	208·78	139·00	347·78
वर्ष में पावतियाँ	25·00	10·00	—	25·00	—	—
शुद्ध	155·24	167·35	322·59	183·78	139·00	322·78

परिशिष्ट - छ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा 1968-69 वर्ष में किए गए अनुसंधान और सर्वेक्षण

परीक्षण विकास

1. सहकारी परीक्षण विकास परियोजना

इस परियोजना का प्रायोजन क्षेत्रीय भाषाओं में दो परीक्षणों को विकसित करना है : आयु वर्ग +7 से 16+ के लिए प्रतिभा हेतु मौखिक परीक्षण तथा 14 से 25 वर्ष आयु-वर्ग के लिए व्यावसायिक रुचि सूची। रुचि सूची प्रयोगावस्था में है। प्रतिभापरीक्षण के लिए मद लेखन और चयन में प्रगति हो रही है। यह कार्य देश के विभिन्न सात केन्द्रों के सहयोग से किया जा रहा है।

2. कक्षा 8 और 11 के लिए हिन्दी में शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण का विकास

श्रेणी 8 और 11 के लिए पृथक-पृथक शैक्षिक-अभिरुचि के दो परीक्षण विकसित किए जा रहे थे। कार्य लगभग पूर्ण है, और इसका तकनीकी-प्रतिवेदन मुद्रणालय को भेज दिया गया है। परीक्ष ण और अनुदेश-नियम पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित की जाएँगी।

3. आयु वर्ग 6—11 के बच्चों के कुछ चुने हुए व्यक्तित्व-लक्षणों का निर्धारण

पूर्व-विकसित कर-निर्धारण मान की मान्यता के लिए एक अवलोकनात्मक-अध्ययन जारी है और कर-निर्धारण मान की व्यवहार तालिकाओं पर आँकड़ों का संग्रह किया जा रहा है।

बाल-विकास

1. विकासात्मक मानक परियोजना ढाई से पाँच वर्ष

दिल्ली के बच्चों के व्यक्तिक-सामाजिक विकास के प्रतिवेदन का प्रारूप बना लिया गया है। सभी सातों केन्द्रों के प्रेरक और व्यक्तिक-सामाजिक विकास संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण पूरा हो गया है। अनुकूली आँकड़ों और भाषा आँकड़ों का विश्लेषण जारी है।

अनुदैर्ध्य अध्ययन : परीक्षण, पाँच वर्षीय के फोटो-अभि-लेख तथा व्यक्तिक-सामाजिक आँकड़ों का विश्लेषण पूर्ण है।

2. दो विधियों से शिक्षित स्कूल-पूर्व वर्गों में संकलपना-निर्माण का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य संरचित अनुभवों के माध्यम से अलगाव में ज्ञान प्रशिक्षण और उन अन्य अनुभवों के संदर्भ में संकल्पना-निर्माण तथा व्यक्तिक-सामाजिक समंजन में तुलनात्मक क्षमता की जाँच करना है जो स्कूल-पूर्व शिक्षा कार्यक्रम का भाग है। संकलपनाओं के आकार-रूप रंग और संख्या को मापने का एक परीक्षण विकसित किया गया था। बच्चों के तीन वर्गों का पूर्व-परीक्षण पूर्ण हो चुका है।

कैशोर्य

1. किशोरों के लिए व्यक्तित्व-सूची का विकास

चार तत्वों अर्थात् पुरुषत्व, स्त्रीत्व, अंतर्मुखता और बहिर्मुखता को समाविष्ट करने वाली एक प्रयोगात्मक प्रश्नमाला का परीक्षण पहले किया गया था। लगभग 3000 मदों के द्वि-मार्गी वर्गीकरण के आधार पर 777 मदों का अंतिम रूप में चयन किया जा चुका है। इन मदों का पुनः परीक्षण किया जा रहा है।

2. प्राधिकरण के प्रति अभिवृत्ति-अध्ययन हेतु मापक्रम का निर्माण

आठ प्राधिकरण-अंकों का अभिज्ञान किया गया है और मदों का उनकी अंतर्वस्तुओं के आधार पर अनुभावात्मक, संज्ञानात्मक और व्यवहारात्मक श्रेणियों में वर्गीकरण किया गया है। लगभग 800 मदों का एक निकाय तैयार है।

मार्गदर्शन एवं परामर्श

1. दो मार्गदर्शन-कार्यक्रमों का दिल्ली के स्कूलों में परीक्षण किया जा रहा है अध्ययन करना है जिनमें निम्न स्तरों पर नवीन गणित को पुरस्थापित करने में कार्यक्रमित अवबोधन सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

2. शिक्षित प्रौढ़ों द्वारा द्वितीय भारतीय भाषा अर्जन में कार्यक्रमित अवबोधन तकनीकों का उपयोग

यह देखने के लिए कि क्या स्वतः अनुदेशक-सामग्री द्वितीय भारतीय भाषा सीखने में उपयोगी होगी,निम्नलिखित दो कार्यक्रमों को विकसित करने हेतु एक परियोजना आरंभ कर रखी है।

(i) बंगला भाषी प्रौढ़ों को हिन्दी शिक्षण

(ii) बंगला भाषी प्रौढ़ों को उड़िया शिक्षण

एक (हिन्दी) कार्यक्रम का प्रारूप तैयार किया जा चुका है और अनेक व्यक्तियों पर इसका परीक्षण भी किया गया है।

3. द्वितीय भाषा शिक्षण हेतु विधि और सामग्री विकसित करने के लिए परियोजना

मनोवैज्ञानिक आधार-विभाग हैदराबाद के केन्द्रीय अंग्रेजी संस्थान, पूना के डेकन महाविद्यालय के भाषा विभाग और अन्नामलाई विश्वविद्यालय के प्रगामी केन्द्र के साथ सहयोग कर रहा है। परियोजना से संबंधित अनुसंधान प्रस्तावों को अंतिम रूप दे दिया गया है।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन

1. (अ) मातृभाषा में बच्चों की निष्पत्तियों के वर्तमान स्तरों का अध्ययन और इसका निम्नतर प्राथमिक, उच्चतर प्राथमिक तथा निम्नतर माध्यमिक स्तरों पर कुछ परिवर्तनशील (चर) से संबंध

मातृभाषा के अनुदेशक लक्ष्य और उनके विशिष्ट विवरण तैयार किए गए थे। अध्ययन के लिए परीक्षण तैयार किया जा रहा है।

(आ) भारत के विभिन्न राज्यों/संघ क्षेत्रों के स्कूल-पाठ्यक्रम में भाषाओं की स्थिति का अध्ययन

सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों के प्राथमिक, मिडिल और माध्यमिक स्कूलों के पाठ्य-विवरणों का विश्लेषण किया गया है। प्रतिवेदन तैयार किया जा रहा है।

(इ) हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विभिन्न भागों में हिन्दी के ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का भाषायी-विश्लेषण और विवरण

अध्ययन का संग्रह हिन्दी में संरचनाओं और व्यंजनों के अक्षर-विश्लेषणात्मक उपाध्ययन के आधार पर तैयार किया गया है। वास्तविक वागोच्चारण फीतों पर संग्रह किए जाएँगे।

2. भारत के विभिन्न राज्यों में अर्थशास्त्र के पाठ्य-विवरणों की स्थिति-अध्ययन

भारत के विभिन्न राज्यों में उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के अर्थशास्त्र-पाठ्य-विवरणों का विश्लेषण किया गया है और एक विवरणिका तैयार कर ली गई है।

3. पाठ्यक्रम-विकास में तुलनात्मक अध्ययन पर एशियाई अनुसंधान परियोजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 'एशियाई देशों में प्राथमिक शिक्षा-स्तर पर पाठ्य-

क्रम विकास के तुलनात्मक अध्ययन' पर एक सहकारी अनुसंधान परियोजना आयोजित करने में सं० रा० शि० वि० और सं० सं० तथा जापान की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् के साथ सहयोग कर रही है। राष्ट्रीय प्रतिवेदन का प्रारूप पाठ्यक्रम के विभिन्न पक्षों पर प्रश्नावली तथा अन्य प्रलेखों के आधार पर तैयार किया गया था। इसका अध्ययन एशियाई देशों के समान-प्रतिवेदनों के साथ ही फरवरी 1969 में, एशियाई देशों के लिए टोक्यो में हुई द्वितीय कार्यशाला में किया गया था। तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रारंभ किया गया था। राष्ट्रीय प्रतिवेदन को अध्ययन के प्रकाश में अंतिम रूप दिया जा रहा है।

4. तिब्बती-स्कूलों में छात्र-निष्पादन का तुलनात्मक अध्ययन

संघ शिक्षा मंत्रालय के अनुरोध पर छः तिब्बती स्कूलों की कक्षा 5 व 8 की सामान्य परीक्षाओं में छात्र निष्पादन का अध्ययन किया गया था। इसके परिणामों ने इन स्कूलों में प्रचलित शिक्षा के सापेक्ष स्तरों को स्पष्ट किया।

शिक्षा की दार्शनिकता

1. आधुनिक भारतीय शैक्षिक विचारों में मूल्य

ब्रिटिश काल के प्रारंभ से कोठारी आयोग के समय तक शिक्षा पर विचारों में मूल्यों का दार्शनिक अध्ययन पूरा कर लिया गया है।

2. ज्ञान के सिद्धांत और शिक्षा के सिद्धांत

अध्ययन ने ज्ञान, शिक्षा और मूल्यों की प्रकृति स्रोत का, ज्ञान और पाठ्यक्रम-निर्माण मान्यकरण के सिद्धान्तों का विश्लेषण किया है। अध्ययन पूरा हो गया है।

3. शैक्षिक अवसरों का समीकरण

4. चरित्र और व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा

1. तुलनात्मक शिक्षा में अनुसंधान के क्षेत्र

इस देश में जिस प्रकार के कार्य की आवश्यकता है उस पर बल देते हुए इस क्षेत्र में अनुसंधान के क्षेत्रों और विधितंत्र का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पूरा हो गया है।

2. भारतीय विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक शिक्षा का शिक्षण

यह अध्ययन भारतीय विश्वविद्यालयों में सिखाए जा रहे विषय-तत्व का एक बृहद् सर्वेक्षण प्रस्तुत करता है और भावी सुधार के लिए सहायक निदेश भी प्रस्तुत करता है।

3. तुलनात्मक शिक्षा का शिक्षण और अनुसंधान

यह अध्ययन एक नमूना तथा अनुसंधान कर्त्ता-विद्वानों के लिए विषय सूची के साथ-साथ देश के बाहर विद्वानों और संस्थानों द्वारा किए जा रहे कार्य का सर्वेक्षण भी प्रस्तुत करता है। अध्ययन चल रहे हैं।

4. शैक्षिक अवसरों का समीकरण

शिक्षा का इतिहास

1. शिक्षा-माध्यम के विवाद का ऐतिहासिक सर्वेक्षण

इस परियोजना का उद्देश्य भारत में पश्चिमी शिक्षा माध्यम के विषय पर विवाद के क्रमिक रूपों का एक ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। परियोजना प्रगति पर है।

2. शैक्षिक अवसरों का समीकरण (एक अंतर अनुशासनात्मक अध्ययन)

इस महत्त्वपूर्ण समस्या पर 1 जून 1969 से विचार प्रारंभ किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस अध्ययन के दो अध्याय पूर्ण हो चुके हैं।

3. शिक्षा के इतिहास में अनुसंधान: आवश्यकताएँ और उपागम

यह एक मूल पत्र है जिसमें भारतीय शिक्षा के इतिहास में विभिन्न अनुसंधान आवश्यकताओं का विवेचन किया गया है। यह परियोजना पूरी की जा चुकी है।

4. भारत में इतिहास बनाम इतिहास शिक्षण के अध्ययन के उपागम

भारतीय स्कूलों में सामाजिक विज्ञानों की

विभिन्न शाखा शिक्षण का एक ऐतिहासिक विश्लेषण का प्रयत्न किया गया है। परियोजना संतोषजनक रूप में आगे चल रही है।

शिक्षा का अर्थशास्त्र

1. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के एकक-मूल्य-अध्ययन में एक अध्ययन

इस लघु-अध्ययन के लिए आँकड़े जमा किए गए थे और उनका विश्लेषण किया गया था। इस अध्ययन को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

2. शैक्षिक अवसर का समीकरण

इस परियोजना के लिए एक अनुसंधान नमूना और प्रथम अध्याय तैयार कर लिया गया है।

शिक्षा का समाज-शास्त्र

1. भारत में और भारत के बाहर शिक्षण व्यवसाय के समाज-शास्त्रीय पक्षों पर एक प्रवर संदर्भ-ग्रंथसूची विकसित की गई है।

2. भारत में सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्त्ता के रूप में स्कूल अध्यापक

(अ) इस परियोजना का एक अनुसंधान नमूना भारत में शिक्षण व्यवसाय के समाज-शास्त्र पर गोष्ठी में तैयार किया गया था और उस पर विवेचन भी हुआ था।

(आ) शिक्षण व्यवसाय का समाज-शास्त्र : अध्ययनों की समीक्षा

इस पत्र में भारत में और भारत से बाहर देशों में शिक्षण व्यवसाय के समाजशास्त्रीय पक्षों से संबंधित एक सौ से अधिक अनुसंधान-अध्ययनों की समीक्षा की गई है।

(इ) भारत में सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में स्कूल शिक्षक: सैद्धांतिक संदर्श

इस पत्र को लिखने के लिए संदर्भ ढूंढ़ लिए गए हैं और उनका अध्ययन कर लिया गया है। लेखन-कार्य में प्रगति है।

3. भारत में शैक्षिक अवसर का समीकरण : एक अंतर अनुशासनात्मक परियोजना

समस्या का आनुभविक समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिए एक अनुसंधान नमूना तैयार कर लिया गया है।

4. भारत में राजनीतिक दल और शिक्षा का प्रकरण : चुनावघोषणा-पत्रों का एक विषय-सूची गत विश्लेषण

आठ राजनीतिक दलों के चुनाव-घोषणापत्रों का विश्लेषण यह जानने के लिए किया गया है कि इन दलों ने देश में शिक्षा को कितना महत्व प्रदान किया है। यह अनुसंधान-पत्र *शैक्षिक योजना पर आगामी वार्षिकी में सम्मिलित करने के लिए विशेष* रूप में तैयार किया गया है।

5. भारतीय समाज के परंपरागत मूल्य और महाविद्यालयों के छात्र

गत वर्ष किए गए इस आनुभविक अध्ययन का प्रतिवेदन संशोधित कर दिया गया है और इसमें मूल्य बनाम भारत में शिक्षा से संबंधित अध्ययनों की समीक्षा पर एक पूरा नया अनुभाग जोड़ दिया गया है।

शैक्षिक प्रशासन

1. विभिन्न राज्यों में शैक्षिक प्रणालियों के प्रशासनिक गठन का एक अध्ययन

इस अध्ययन का प्रयोजन राज्य मुख्यालयों और मंडलों तथा जिला स्तरों पर प्रशासनिक व्यवस्था, परामर्शदात्र व कानूनी निकायों के गठन और कार्य, शिक्षा के वित्त आदि के संर्धभिका आँकड़ों को संग्रह करना और उनका विश्लेषण करना है।

2. राज्य अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अधिनियमों के मुख्य लक्षणों का एक तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य अनिवार्य शिक्षा के लिए कानूनी प्राविधान-निर्माण है। आठ राज्यों और दो संघीय क्षेत्रों में संग्रहीत आँकड़ों का विश्लेषण किया गया था।

3. भारत में शैक्षिक योजना—स्कूल शिक्षा में गुण बनाम परिमाण

इस अध्ययन का प्रयोजन चुने हुए राज्यों में परिमाणों की अपेक्षा गुणों पर बल प्रदान करने से संबद्ध कारकों से अभिज्ञान करना है। राजस्थान, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र और असम से संग्रहीत आँकड़ों की छानबीन की जा चुकी है।

4. भारतीय संघ के विभिन्न राज्यों में शैक्षिक योजना का प्रशासनिक गठन

इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न राज्यों में शैक्षिक योजना के प्रशासनिक गठन की परीक्षा करना है। एक प्रश्नमाला के 14 राज्यों और तीन संघीय क्षेत्रों से आए हुए उत्तरों की आँकड़ों की पूर्णता और संगति की दृष्टि से जांच-पड़ताल की गई थी।

5. माध्यमिक स्कूल के सर्वोत्तम आकार का अवधारण

इस अध्ययन का प्रयोजन माध्यमिक स्कूल के सर्वोत्तम आकार का अवधारण करना है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के स्वा० शि० क० परियोजना 001 "भारत में माध्यमिक स्कूलों का सर्वेक्षण" के संबद्ध में विभिन्न राज्यों से प्राप्त प्रश्नमालाओं में से संबद्ध आँकड़े चुन लिए गए थे। असम से संबद्ध आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

6. प्राथमिक स्कूल पर्यवेक्षकों के हेतु सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रम

राज्य शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राथमिक स्कूल पर्यवेक्षकों के हेतु आयोजित सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के संबंध में आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण किया गया था। इन कार्यक्रमों का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करने वाला एक पत्र तैयार कर लिया गया है।

7. ग्राम-प्राथमिक एवं मिडिल स्कूलों में क्षति एवं कुंठा

बिहार में कुछ चुने हुए देहाती और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने और कुंठित होने के भार का विश्लेषण करने के लिए संग्रहीत आँकड़े प्रक्रियागत हो चुके हैं।

श्रव्य दृश्य शिक्षा

1. **शिक्षा में विज्ञान-फिल्मों के प्रति छात्रों की राय का एक अध्ययन**

   अध्ययन पूरा हो कर मुद्रित हो गया है।

2. भारत में प्रशिक्षण महाविद्यालयों में श्रव्य-दृश्य उपकरण और सामग्री की प्राप्यता का एक सर्वेक्षण।
3. भारत में माध्यमिक स्कूलों में श्रव्य-दृश्य उपकरण की प्राप्यता का एक सर्वेक्षण।
4. श्रव्य दृश्य शिक्षा विभाग के पास उपलब्ध प्रशिक्षण-फिल्मों के उपयोग पर अध्ययन।

ये अध्ययन चल रहे हैं।

अध्यापक शिक्षा

1. (1) **माध्यमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा के द्वितीय राष्ट्रीय सर्वेक्षण** का प्रतिवेदन पूरा हो चुका है, और मुद्रण के लिए भेजा गया है।

   (2) **प्राथमिक स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अखिल** भारतीय सर्वेक्षण का **प्रतिवेदन** भी पूरा हो चुका है, और मुद्रण के लिए भेजा गया है।

   (3) **माध्यमिक प्रशिक्षण संस्थानों में मूल्यांकन कार्यविधियों का एक तुलनात्मक अध्ययन** ऐसे सौ प्रशिक्षण महाविद्यालयों को प्रश्नमालाएँ भेजी गई थीं जिनके साथ विस्तार सेवा केन्द्र संबद्ध हैं। आंकड़ों का विश्लेषण किया जा चुका है और प्रतिवेदन प्रकाशन के लिए तैयार है।

   (4) **शिक्षा-शिक्षण के कार्य में आत्म-यथार्थीकरण का अध्ययन** : आँकड़ों का विश्लेषण पूर्ण होने वाला है।

   (5) **अध्यापक-प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण हेतु सामाजिक आर्थिक स्थिति और अभिप्रेरणा का अध्ययन:** केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली के 181 महिला और 64 पुरुष छात्र-शिक्षकों

पर यह अध्ययन किया गया था। प्रतिवेदन पूर्ण हो गया है।

(6) प्राथमिक स्तर पर अध्यापक-शिक्षकों की स्थिति का एक अध्ययन

इस मार्गदर्शी अध्ययन का गठन दिल्ली के दो प्रशिक्षण संस्थानों में किया गया था। दस अन्य राज्यों के आँकड़े एकत्र किए गए हैं और उनका विश्लेषण किया जा रहा है।

(7) पंजाब में माध्यमिक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के मामले-अध्ययन

एक प्रवाचक और दो प्राध्यापकों के एक दल ने निम्नलिखित स्थानों का भ्रमण किया :

खालसा शिक्षा महाविद्यालय, अमृतसर। महिला देवसमाज शिक्षामहाविद्यालय फिरोजपुर। राजकीय स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, चंडीगढ़।

राज्य शिक्षा संस्थानों द्वारा उनकी स्थापना से ही किए गए कार्य का अध्ययन

राज्य शिक्षा संस्थान के कार्य का विभाजन पाँच भागों अर्थात् (1) अनुसंधान, (2) प्रशिक्षण, (3) विस्तार, (4) प्रकाशन, एवं (5) व्यावसायिक वृद्धि में किया गया है। इन क्षेत्रों में राज्य शिक्षा संस्थानों द्वारा किए गए कार्य का विश्लेषण किया जा चुका है और प्रतिवेदन लिखे जा रहे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा

निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएँ प्रतिवेदन वर्ष में पूरी की गई थीं :

1. "दिल्ली के कुछ ग्रामों में खाद्य-भंडार की विधियाँ" शीर्षक विषय पर एक अध्ययन
2. "सामाजिक शिक्षा के कार्यभारी जिला अधिकारियों के हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन संबंधी अध्ययन।"
3. भारत में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में सामाजिक शिक्षा के अंश का अध्ययन।
4. मार्गदर्शी देहाती कृषि दूरवीक्षण परियोजना की प्रभावोत्पादकता का परिमाणात्मक मूल्यांकन।
5. शिक्षा स्तर से संबंधित समुदाय-स्थिति की परिवर्तन-प्रक्रिया का एक अध्ययन।
6. सन्निहित क्षेत्रों में रहने वाले चुने हुए आदिवासी समुदायों का एक एकीकृत और तुलनात्मक अध्ययन।
7. आदिवासी लोगों की विकासगत आवश्यकताएँ।
8. भारत में 18 आदिवासी-जातियों की शैक्षिक और आर्थिक अवस्थाओं तथा नियुक्ति की स्थिति का अध्ययन।
9. द्वितीय भाषा के रूप में मराठी सीखने के लिए पाठ्य-पुस्तक की तैयारी।

निम्नलिखित परियोजनाएँ चल रही हैं और 1969-70 वर्ष में पूरी हो जाएँगी।

10. ग्रामीण महिलाओं द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम स्वीकृति पर संदर्भ दल का प्रभाव।
11. विद्यापीठों के भाग लेने वालों की आवश्यकताओं, रुचिओं और आकांक्षाओं का एक अध्ययन।
12. भारत में सतत शिक्षा संस्थानों का स्तरीय-अध्ययन।
13. दिल्ली में देहाती कृषि दूरवीक्षण कार्यक्रम का निरंतर मूल्यांक।
14. मेरठ ग्राम, उत्तर प्रदेश में साक्षरता परियोजना का मूल्यांकन।

शैक्षिक विकास और शिक्षक मनोबल एवं अभिप्रेरण

1. राजस्थान और गुजरात में शैक्षिक विकास का एक तुलनात्मक अध्ययन

यह एक सतत् अध्ययन है और इसका उद्देश्य इन दो राज्यों के शैक्षिक विकास में अंतर्ग्रस्त सामाजिक मनोविज्ञान तत्त्वों का पता लगाना है। शिक्षाके विकास के संबंध में आधार-सामग्री संग्रह की जा चुकी है।

2. प्रतिपुष्टि के माध्यम से शिक्षक व्यवहार में परिवर्तन लाना

इस अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक व्यवहार के आदर्शों से संबंधित तत्व के रूप में शिक्षक व्यवहार के आदर्शों को विकसित करना है। शिक्षक व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए प्रतिपुष्टि के उपयोग के संबंध में कुछ प्राथमिक आधार सामग्रियों का संग्रह किया जा चुका है।

3. शैक्षिक वृद्धि के लिए शिक्षक मनोबल और अभिप्रेरण विकसित करना

यह एक सतत कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य (1) शिक्षकों में अभिप्रेरण विकसित करने के लिए निरूपित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का दीर्घकालीन प्रभाव, और (2) प्रशिक्षित शिक्षकों का उनके संस्थानों, कक्षाओं और छात्र-वृद्धि पर प्रभाव पता करना है। कुछ प्रयोगात्मक परियोजनाएँ स्कूल तथा प्रशिक्षण स्कूल/महाविद्यालय-स्तर पर प्रारम्भ की हुई हैं।

शैक्षिक सर्वेक्षण

निम्नलिखित अध्ययन और अन्वेषण पूर्ण कर लिए गए हैं :

1. तकनीकी (इंजीनियरी) स्रोत प्रस्तुत करने वाले उच्च/उच्चतर माध्यमिक/बहुउद्देशीय स्कूलों का सर्वेक्षण

यह सर्वेक्षण सभी राज्यों में किया गया था और इसमें इस स्रोत को चलाने के लिए स्कूल में प्राप्त भौतिक सुविधाओं का, जिसमें प्रयोगशाला, फार्म या कार्यशाला सुविधाएँ आदि सम्मिलित हैं।

2. शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों का सर्वेक्षण

(अ) बधिर, मूक और वाक् शक्तिहीन

(आ) अंध

यह सर्वेक्षण सभी राज्यों तथा संघ क्षेत्रों में किया गया था, और इसमें साधन, पाठ्यक्रमों की अन्तर्वस्तु, विधितंत्र कर्मचारी-वर्ग की योग्यताएँ, उनके ऊपर कार्यभार सहित शारीरिक सुविधाएँ सम्मिलित थीं।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापिकाओं का सर्वेक्षण

राजस्थान के तीन जिलों में किया गया यह अग्रगामी अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापिकाओं के काम की अव्यवस्थाओं का दिग्दर्शन कराता है।

4. भारत में जनक-अध्यापक संघ का सर्वेक्षण

यह अध्ययन अपने स्कूलों में जनक-अध्यापक संघों का दिग्दर्शन कराता है।

5. शैक्षिक प्रगति के संबंध में प्रखंडों का प्रकृष्ट अध्ययन

द्वितीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के हेतु डॉक्टर वी० के० आर० वी० राव की अध्यक्षता में बनी सलाहकार समिति ने इच्छा प्रकट की कि शैक्षिक प्रगति के संबंध में कुछ ग्रामीण सामुदायिक विकास खंडों का अध्ययन किया जाय। अतः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक सुविधाओं के संबंध में कुछ प्रखंडों का प्रकृष्ट अध्ययन किया गया है।

6. शहरी क्षेत्रों में मान्यता-हीन संस्थानों का सर्वेक्षण

हैदराबाद और सिकंदराबाद की दोनों नगरियों के पूर्व प्राथमिक/बाल-बाड़ी/शिशु/प्राथमिक, मिडिल और माध्यमिक-स्तरों पर तथा दिल्ली के लिए नमूना आधार पर मान्यता-हीन संस्थानों का अध्ययन करने का एक प्रयास किया गया है। आधार-सामग्री का संग्रह कर लिया गया है।

7. मान्यता-प्राप्त व्यावसायिक संस्थानों का सर्वेक्षण

केवल मैसूर राज्य में किया गया यह सर्वेक्षण मान्यता के लिए शर्तों, इन संस्थानों का वास्तविक-कार्यक्रम, उपलब्ध सुविधाओं शिक्षण/पर्यवेक्षण, कर्मचारी-वर्ग के लिए योग्यताओं, कर्मचारी-वर्ग के लिए वेतन-मान आदि प्रदर्शित करता है।

परिशिष्ट - ञ

1968-69 की अवधि में बाहर की संस्थाओं को शैक्षिक अनुसंधान परियोजनाओं के हेतु दी गई वित्तीय सहायता

क्र. सं. 1	संस्था 2	परियोजना का शीर्षक 3	अवधि 4	कुल स्वीकृत परिव्यय 5
1.	एम० बी० पटेल शिक्षा महाविद्यालय, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बल्लभ विद्यानगर, गुजरात।	(गुजरात, कैरा जिले के) उच्च स्कूलों में उपलब्धि अभिप्रेरण, विकास तथा छात्र-वृद्धि का एक अध्ययन।	2 वर्ष	रु० 36,100.00
2.	साधना शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण स्कूल, लायन्स क्लब के पास, बाल उद्यान, जुहू मार्ग, सान्ताक्रुज (पश्चिम), बंबई-54।	5, 6 और 7वें स्टैन्डर्ड में अध्ययन कर रहे बच्चों को (अ) गुजराती और (आ) मराठी के माध्यम से कुछ चुने हुए विषयों तथा (1) बहुभाषी योग्यता और (2) अंकगणित में नैदानिक परीक्षणों का विकास।	3 वर्ष	रु० 73,960.00
3.	शिक्षा विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़-3	शहरी और देहाती स्कूल-छात्रों और शिक्षकों की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन।	1 वर्ष	रु० 5,600.00
4.	शिक्षा विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।	प्रारंभिक शैशवावस्था में भाषा विकास का अध्ययन।	1 वर्ष	रु० 5,600.00
5.	तिलकधारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)।	उत्तर प्रदेश के वाराणसी क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में कक्षा 9 और 10 के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों की समस्याएँ।	1 वर्ष	रु० 5,280.00
6.	भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	द्विभाषी वक्ताओं के वाक्-व्यवहार का वर्णन करने के लिए एक भाषायी-प्रतिमान।	1 वर्ष	रु० 10,000.00
7.	समाजशास्त्र विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।	छात्र-अशांति का समाजशास्त्रीय अध्ययन उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयीय नगरों में कारण और उपाय।	1 वर्ष	रु० 28,800.00
8.	सांख्यिकी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता।	प्राथमिक स्कूलों में अध्ययन और कार्य के लिए उपलब्ध सुविधाएँ और उन स्कूलों के शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक अवस्थाएँ।	1 वर्ष	रु० 23,000·00
9.	शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।	भारतीय पब्लिक स्कूल : उनके द्वारा प्रदत्त नेतृत्व नमूने के विशेष संदर्भ में उनकी वृद्धि और विकास का एक अध्ययन।	1½ वर्ष	रु० 24,900.00
10.	जी० के० देहाती शिक्षा संस्थान, गरगोती।	प्राथमिक स्कूलों में श्रेणी 1 से 4 के हेतु अवर्गित एकक।	2½ वर्ष	रु० 1,000.00
11.	जी० के० देहाती शिक्षा संस्थान, गरगोती, जिला कोल्हापुर।	देहाती क्षेत्रों में एकाकी शिक्षक स्कूलों में अतिक्षय और कुण्ठा कम करने का एक प्रयोग।	1 वर्ष	रु० 3,500.00

12. इसाबेल्ला थबर्न महाविद्यालय, लखनऊ ।	प्राथमिक स्कूल छात्रों के लिए नैदानिक पठन-परीक्षण (हिन्दी) ।	2 वर्ष	रु० 1,200.00
13. श्री अविनाशिलिंगम गृह-विज्ञान महाविद्यालय, कोयंबटूर-11.	बालिकाओं और उनके जनकों की उत्कृष्ट आकांक्षाओं और अभिवृत्तियों के विशेष संदर्भ में देहाती क्षेत्रों में 11-17 वर्षायु बालिकाओं की शिक्षा की समस्याएँ ।	1 वर्ष	रु० 13,500.00
14. शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ।	हरियाणा में कक्षा 4 के बांगड़ू भाषी छात्रों के लिए हिन्दी में नैदानिक परीक्षणों की संरचना ।	2 वर्ष	रु० 12,600.00
15. मनोविज्ञान विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर ।	स्कूल पर्यावरण की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ ।	12 वर्ष	रु० 27,000.00
16. मानव-विज्ञान विभाग, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर ।	बस्तर (म० प्र०) का एक शैक्षिक सर्वेक्षण ।	2 वर्ष	रु० 22,500.00
17. मनोविज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची ।	भारतीय स्थितियों में 4-9 वर्षों के आयु-वर्ग के लिए संस्कृति उचित बुद्धि परीक्षण मान-1 का मानवीकरण ।	15 मास	रु० 15,000.00
18. ए० जी० शिक्षक महाविद्यालय, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-9 ।	प्राथमिक स्कूलों में प्रवेश पाने से पूर्व दो वर्ष तक बालबाड़ी में उपस्थित रहने वाले प्राथमिक स्कूल-छात्रों के शैक्षिक विषयों और विकासात्मक कार्यों में उपलब्धि के स्तरों की उन लोगों से तुलना जिन्होंने ऐसा नहीं किया ।	1 वर्ष	रु० 8,000.00
19. मनोविज्ञान विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ।	सामाजिक-सांस्कृतिक उत्तेजक पर्यावरण के कारण के रूप में संज्ञात्मक वृद्धि ।	2½ वर्ष	रु० 26,300.00
20. शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	संगत, अधिसामान्य, कम सामान्य तथा सामान्य निष्पत्ति महाविद्यालय छात्रों की समस्याएँ ।	1 वर्ष	रु० 5,000.00
21. दर्शन और मनोविज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।	विश्वविद्यालय-छात्रों के कार्य-अभिस्थापन के कुछ सहसंबंधों में अन्वेषण ।	2 वर्ष	रु० 25,700.00
22. व्यापार-प्रबंध और औद्योगिक प्रशासन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।	उत्पादन और पणन के विशेष संदर्भ में, भारत में पुस्तक-व्यापार की समस्याओं का एक अध्ययन ।	2 वर्ष	रु० 39,600.00
23. शैक्षिक अनुसंधान केन्द्र, जन-अनुदेश विभाग, बंगलौर ।	मैसूर राज्य में शिक्षा का इतिहास ।	6 मास	रु० 7,000.00
24. रामकृष्ण मिशन विद्यालय, शिक्षक महाविद्यालय, जयपुर ।	वर्ग 2 से 5 में तमिल पठन में गति के लिए आदर्श-स्थापन ।	2 वर्ष	रु० 21,000.00

25. राजनीतिशास्त्र-विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।	राजस्थान में पंचायती राज के अधीन प्राथमिक स्कूलों का प्रबंध।	2 वर्ष	रु० 35,600.00
26. डॉक्टर जगदीश पी० दवे, 70 बर्च पार्क, सारेस्ट, 111,60166, यू०एस०ए०	"भारत में चुने हुए स्कूलों में सन् 1946 से 61 तक सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में परिवर्तन," शीर्षक पी० एच० डी० शोध-निबंध का प्रकाशन।	1 वर्ष	रु० 1,000.00
27. डॉक्टर एन० के० अम्बष्ट, प्राध्यापक, प्रौढ़ शिक्षा विभाग, रा० शै० अ० और प्र० प०, 37 फ्रैण्ड्स कालोनी, दिल्ली-14।	"राँची जिले के विशेष संदर्भ में आदिवासी शिक्षा का एक समालोचनात्मक अध्ययन" शीर्षक पी-एच० डी० शोध-प्रबंध का प्रकाशन।	1 वर्ष	रु० 1,000.00
28. डॉक्टर एस० एन० कानूनगो, इतिहास- प्राध्यापक, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।	"भारत में अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि" शीर्षक अनुसंधान-कृति का प्रकाश।	1 वर्ष	रु० 1,000.00

परिशिष्ट - झ

प्रकाशन

विज्ञान

1. जनरल सायन्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स-बुक 2
2. फिजिक्स पार्ट-2
3. केमिस्ट्री पार्ट-1
4. बायोलौजी पार्ट-2
5. फिजिक्स पार्ट–1 (प्रथम पुनर्मुद्रण)
6. भौतिकी भाग–1 (प्रथम पुनर्मुद्रण)
7. जीव-विज्ञान भाग–1 (प्रथम पुनर्मुद्रण)
8. ए टैक्स्ट बुक ऑफ कैमिस्ट्री फॉर सैकन्ड्री स्कूल्स
9. बायोलोजी सैक्शन–3 : ए टैक्स्ट बुक फॉर सैकन्ड्री स्कूल्स(थर्ड रिप्रिन्ट एडिशन)
10. बायोलौजी फॉर मिडिल सकूल्स (ऐक्सपेरिमेन्टल एडिशन) पार्ट–1
11. बायोलौजी फॉर मिडिल स्कूल्स (ऐक्सपेरिमेन्टल एडिशन) पार्ट–2
12. बायोलौजी फॉर मिडिल स्कूल्स (ऐक्सपेरिमेन्टल एडिशन) पार्ट–3
13. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स (ऐक्सपेरिमेन्टल एडिशन) पार्ट–1
14. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स (ऐक्सपेरिमेन्टल एडिशन) पार्ट–2
15. जनरल सायन्स फॉर यू : ऐ टैक्स्टबुक फॉर सैकन्ड्री स्कूल्स

गणित

16. एलिमैन्ट्स ऑफ प्रोबेबिलिटी
17. ज्योमैट्री पार्ट–2
18. रेखागणित भाग–2
19. ज्योमैट्री पार्ट–1 (फर्स्ट रिप्रिन्ट एडिशन)
20. ए टैक्स्टबुक आफ अलजबरा फॉर सैकन्डरी स्कूल्स पार्ट–1
21. ए टैक्स्टबुक आफ अलजबरा फॉर सैकन्डरी स्कूल्स पार्ट–2

प्रौद्योगिकी

22. वर्कशाप प्रैक्टिस : ए टैक्स्टबुक फॉर टैक्निकल स्कूल्स वाल्यूम–2
23. रीडिंग ब्लु प्रिन्ट्स एण्ड स्कैचिंग-एन ऐलिमैन्ट्री टैक्स्टबुक फॉर टैक्निकल एण्ड वोकेशनल स्कूल्स

सामाजिक अध्ययन

24. भारत और संसार
25. अवर कन्ट्री-इंडिया पार्ट–1
26. अवर कन्ट्री-इंडिया पार्ट–2
27. हमारा देश भारत भाग 1
28. इंडिया एंड दि वर्ल्ड
29. हमारा देश भारत भाग 2

इतिहास :

30. एन्शेन्ट इंडिया : (रिवाइज्ड एडिशन)

हिन्दी

31. राष्ट्रभारती भाग–2
32. काव्य-संकलन (चतुर्थ पुनर्मुद्रण)
33. राष्ट्रभारती भाग–3
34. गद्य-संकलन (चतुर्थ पुनर्मुद्रण)
35. कहानी-संकलन
36. आओ पढ़ें और सीखें
37. एकांकी-संकलन (प्रथम पुनर्मुद्रण)
38. कहानी-संकलन (प्रथम पुनर्मुद्रण)
39. गद्य-संकलन (पंचम पुनर्मुद्रण)

संस्कृत

40. संस्कृतोदय :

अध्यापकों की पुस्तकें, पाठ्यक्रम मार्ग दर्शिकाएँ, छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाएँ

41. जनरल सायन्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स : ए टीचर्स हैन्डबुक ऑफ ऐक्टीविटीज वाल्यूम-1

42. जनरल सायन्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स : ए टीचर्स हैन्डबुक ऑफ ऐक्टीविटीज़ वाल्यूम-2
43. 'हमारी दिल्ली' के लिए शिक्षक पुस्तिका
44. 'भारत और संसार' के लिए शिक्षक पुस्तिका
45. 'मेरी अभ्यास पुस्तिका'—आओ पढ़ें और समझें (तीसरी पुस्तक)
46. 'हमारा देश भारत' के लिए शिक्षक-पुस्तिका
47. मेरी सुलेख पुस्तिका भाग—1
48. मेरी सुलेख पुस्तिका भाग—2
49. मेरी सुलेख पुस्तिका भाग—3
50. टीचर्स हैन्डबुक फॉर सोशल स्टडीज फॉर क्लासेस—1 एण्ड 2
51. 'मेरी अभ्यास-पुस्तिका'—आओ पढ़ें और सीखें (चौथी पुस्तक)
52. इन्साइट इंटू मैथेमैटिक्स—टीचर्स गाइड
53. 'आओ पढ़ें और समझें' के लिए शिक्षक-पुस्तिका
54. बायोलौजी फॉर मिडिल स्कूल्स—टीचर्स गाइड पार्ट—1
55. बायोलौजी फॉर मिडिल स्कूल्स-टीचर्स गाइड पार्ट—2
56. बायोलौजी फॉर मिडिल स्कूल्स-टीचर्स गाइड पार्ट—3
57. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स-लैबोरेटरी मैनुअल पार्ट—1
58. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स-लैबोरेटरी मैनुअल पार्ट—2
59. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स-टीचर्स गाइड पार्ट—1
60. कैमिस्ट्री फॉर मिडिल स्कूल्स-टीचर्स गाइड पार्ट—2

पूरक पुस्तकें

61. दि लाइफ एण्ड वर्क ऑफ मेघनाद साहा
62. गौतम बुद्ध
63. लीजेन्ड्स ऑफ इंडिया
64. जीसस क्राइस्ट
65. सर सैयद अहमद खान
66. अकबर

अनुसंधान मोनोग्राफ/अध्ययन

67. वेस्टेज एंड स्टगनेशन इन प्राइमरी एण्ड मिडिल स्कूल्स इन इंडिया
68. अचीवमैन्ट मोटिव इन हाई स्कूल बॉयेज
69. जूडिशल रिव्यू एंड ऐज्यूकेशन—ए स्टडी इन ट्रैन्ड्स

पुस्तिकाएँ व विवरणिकाएँ

70. बाल-साहित्य-सूची भाग—2
71. गाइडैन्स इन स्कूल्स
72. नेशनल सेमिनार ऑन वेस्टेज एंड स्टगनेशन
73. इनागुरल स्पीच ऑफ ऐज्यूकेशन मिनिस्टर फॉर सेन्ट्रल एड्वाईजरी बोर्ड आफ ऐज्यूकेशन
74. यू एण्ड यौर फ्यूचर
75. टीचर स्पीक्स वाल्यूम—5
76. बिब्लियोग्राफी ऑन इन्सपैक्शन एंड सुपरविज़न
77. ए स्कीम आफ ग्रांट-इन-एड फॉर अप्रूव्ड रिसर्च प्रोजैक्ट्स
78. समरी आफ फाइन्डिंग्स-सेकिंड ऑल इंडिया ऐज्यूकेशनल सर्वे
79. सिलेबी अफ प्रि-प्राइमरी टीचर्स ट्रैनिंग इन्स्टीच्यूशन्स
80. बाल-साहित्य-सूची भाग—3
81. किसान साक्षरता योजना
82. ए स्कीम ऑफ असिस्टैन्स फॉर प्रोजैक्ट्स एण्ड ऐक्सपैरीमैन्ट्स इन सैकन्ड्री स्कूल्स
83. एन. सी. ई. आर.टी. बुक्स एण्ड टैक्स्टबुक्स 1969 कैटेलॉग

भारतीय शिक्षा वार्षिकी

84. फर्स्ट ईयरबुक : ए रिव्यू ऑफ ऐज्यूकेशन इन इंडिया (1947 पार्ट-2) (फर्स्ट रिवाइज्ड एडिशन)

पत्र-पत्रिकाएँ

85. एन. आई. ई. जर्नल मे— 68
86. एन. आई. ई. जर्नल —जुलाई 68
87. एन. आई. ई. जर्नल —सेप्टेम्बर 68
88. एन. आई. ई. जर्नल —नवंबर 68
89. एन. आई. ई. जर्नल —जनवरी 69

90. एन. आई. ई. जर्नल —मार्च 69 इशू
91. इंडियन ऐज्यूकेशनल रिव्यू—जुलाई 68
92. इंडियन ऐज्यूकेशनल रिव्यू—जनवरी 69
93. स्कूल सायन्स —जून 68
94. स्कूल सायन्स —सेप्टेम्बर 68
95. स्कूल सायन्स —दिसंबर 68
96. एन. आई. ई. न्यूजलैटर—जून 68
97. एन. आई. ई. न्यूजलैटर—सेप्टेम्बर 68
98. एन. आई. ई. न्यूजलैटर—दिसंबर 68
99. एन. आई. ई. न्यूजलैटर—मार्च 69

निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें, पूरक शैक्षिक सामग्री आदि मुद्रणाधीन हैं—

1. प्राचीन भारत
2. मध्यकालीन भारत
3. जीव-विज्ञान भाग—3
4. हिन्दी व्याकरण और रचना
5. अफ्रीका और एशिया
6. काव्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
7. गद्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
8. गद्य-संकलन और काव्य-संकलन (संयुक्त संस्करण)
9. स्थानीय शासन
10. रानी मदन अमर (पुनर्मुद्रण)
11. आओ हम पढ़ें (पुनर्मुद्रण)
12. अंकगणित-बीजगणित भाग—2 (पुनर्मुद्रण)
13. रेखागणित भाग—2 (पुनर्मुद्रण)
14. अफ्रीका एंड एशिया
15. इन्साइट इन्टू मैथेमैटिक्स बुक—1
16. ऐलिमैन्ट्स ऑफ बुक कीपिंग एंड अकाउन्टैन्सी
17. ए फर्स्ट कोर्स इन मॉडर्न अलजबरा
18. कैमिस्ट्री पार्ट—1 (रिप्रिन्ट)
19- फिजिक्स पार्ट—2 (रिप्रिन्ट)
20. बायोलौजी पार्ट—2 (रिप्रिन्ट)
21. ज्योमैट्री पार्ट—2 (रिप्रिन्ट)
22. कहानी-संकलन (पुनर्मुद्रण)
23. एकांकी-संकलन (पुनर्मुद्रण)
24. काव्य के अंग (पुनर्मुद्रण)
25. अरिथमैटिक अलजबरा पार्ट—2 (रिप्रिन्ट)
26. बायोलौजी फॉर सेकन्ड्री स्कूल्स-सैक्शन्स 1, 2, 4 एण्ड 5, 6 एण्ड 7 (रिप्रिन्ट)
27. इंगलिश टैक्स्टबुक, क्लास—3 (स्पेशल सिरीज)
28. इंगलिश टैक्स्टबुक, क्लास—6 (स्पेशल सिरीज)
29. इंगलिश टैक्स्टबुक, क्लास—9 (स्पेशल सिरीज)
30. इंगलिश टैक्स्टबुक, क्लास—6 (जनरल सिरीज)
31. इंगलिश टैक्स्टबुक, क्लास—9 (जनरल सिरीज)
32. प्लेन ट्रिगोनोमैट्री
33. इकॉनॉमिक एण्ड कमर्शियल ज्योग्राफ़ी
34. प्रैक्टिकल ज्योग्राफी (रिप्रिन्ट)
35. फिजिकल ज्योग्राफी (रिप्रिन्ट)
36. इकॉनॉमिक ज्योग्राफी (रिप्रिन्ट)
37. मिडीवल इंडिया (रिप्रिन्ट)
38. एन्शैन्ट इंडिया (रिप्रिन्ट)
39. 'आओ पढ़ें और सीखें' के लिए अध्यापक पुस्तिका
40. 'आओ पढ़ें और खोजें, के लिए अध्यापक पुस्तिका
41. 'मेरी अभ्यास पुस्तिका' कक्षा 5 के लिए
42. 'राष्ट्रभारती' भाग—2 के लिए अध्यापक पुस्तिका
43. प्राथमिक कक्षाओं के लिए विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका खंड 1
44. मेरी अभ्यास पुस्तिका (रानी, मदन, अमर) (पुनर्मुद्रण)
45. मेरी अभ्यास पुस्तिका (चलो पाठशाला चलें) (पुनर्मुद्रण)
46. मेरी अभ्यास पुस्तिका (आओ हम पढ़ें) (पुनर्मुद्रण)
47. मेरी सुलेख पुस्तिका खंड—1 (पुनर्मुद्रण)
48. मेरी सुलेख पुस्तिका खंड—2 (पुनर्मुद्रण)
49. मेरी सुलेख पुस्तिका खंड—3 (पुनर्मुद्रण)
50. रिसर्च इन क्लासरूम—ए रिपोर्ट
51. जनरल सायन्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स—ए टीचर्स हैन्डबुक— वाल्यूम—3
52. बायोलौजी टीचिंग नोट्स (सैकन्ड्री स्कूल्स)
53. बायोलौजी टीचिंग चार्ट्स (सैकन्ड्री स्कूल्स)

54. टीचिंग होम सायन्स (सैकन्ड्री स्कूल्स)
55. टीचर्स गाइड, क्लास –3, इंगलिश टैक्स्टबुक (स्पेशल सिरीज)
56. टीचर्स गाइड, क्लास–6, इंगलिश टैक्स्टबुक (स्पेशल सिरीज)
57. टीचर्स गाइड, क्लास –6 इंगलिश टैक्स्टबुक जनरल सिरीज)
58. टीचर्स गाइड, क्लास–9, इंगलिश टैक्स्टबुक (जनरल सिरीज)
59. वर्कबुक, क्लास–3, (स्पेशल सिरीज)
60. वर्कबुक, क्लास–6, (जनरल सिरीज)
61. सोशल स्टडीज-ए टैक्स्टबुक फॉर सैकन्ड्री स्कूलस

पूरक पुस्तकें

62. भारत की कथाएँ
63. दि डिस्कवरी आफ दि ओशन्स
64. जरथ्रस्त्र
65. राजा राममोहन रॉय
66. दि रोमान्स ऑफ बैंकिंग
67. फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया
68. दि रोमान्स ऑफ थियेटर
69. दि फिंगर ऑन दि ल्यूट
70. इंडिया–दि लैंड ऐण्ड दि पीपुल

अनुसंधान मोनोग्राफ्स/अध्ययन

71. स्कोलैस्टिक एप्टीच्यूड्स टैस्ट्स फॉर क्लासेस –8 एण्ड 9
72. इवेलुएटिव क्राइटेरिया फॉर इन्स्पेक्शन एण्ड सुपरविजन
73. सर्वे ऑफ अचीवमेंट इन मैथेमैटिक्स एट थ्री लेवेल्स ऑफ स्कूल ऐजूकेशन
74. सैकंड नेशनल सर्वे ऑफ सैकंड्री-टीचर ऐज्यू-केशन इन इण्डिया
75. ए स्टडी ऑफ कन्फारमिटी एंड बिन अमंग एडोलेसैंट्स
76. करीकुलम एंड टीचिंग ऑफ मैथेमैटिक्स इन हायर सैकन्ड्री स्कूल
77. ए स्टडी आफ कॉस्ट्स ऑफ ऐज्युकेशन इन इण्डिया
78. आइडेन्टिफिकेशन एंड इंसीडेन्स आफ टेलेन्ट
79. मेजरमेंट आफ कॉस्ट प्रोडक्टिविटी एंड ऐफीशैन्सी ऑफ ऐजुकेशन

पुस्तिकाएँ व विवणिकाएँ

80. समाज-सेवा व्यवसाय
81. लिपिक वर्ग के व्यवसाय
82. फेसेट्स ऑफ इंडियन ऐजूकेशन
83. ए गाइड बुकलेट फॉर नर्सरी स्कूल टीचर्स
84. कैटेलाग ऑफ फिल्म्स